सोमवार
10 जून 2024

पृष्ठ 4

गोदी में लेकर चला रहे हैं लैपटॉप तो...

पृष्ठ 5

सूर्या की कांगुवा में दिखेगा जबदस्त...

● देहरादून
● वर्ष 32
● अंक 128
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

पाषाण के भीतर भी मधुर स्रोत होते हैं, उसमें मदिरा नहीं शीतल जल की धारा बहती है।
– जयशंकर प्रसाद

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक
आर.एन.आई.- 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

10 जुलाई को होगा मंगलौर व बद्रीनाथ विधानसभा का उपचुनाव

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव निपटने के बाद अब एक बार फिर उत्तराखंड में चुनावी कोलाहल शुरू होने वाला है। निर्वाचन आयोग द्वारा उत्तराखंड की दो विधानसभा सीटों सहित सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों के लिए होने वाले उपचुनाव को चुनावी कार्यक्रम की घोषणा कर दी गई है। जिसके अनुसार राज्य की रिक्त हुई दो विधानसभा सीट मंगलौर और बद्रीनाथ सीट के लिए 10 जुलाई को वोट डाले जाएंगे तथा 13 जुलाई को मतगणना होगी।

- सात राज्यों की 13 सीटों पर होंगे चुनाव
- 15 जुलाई को मतगणना और चुनाव परिणाम

जिन सात राज्यों में उपचुनाव होना है उनमें उत्तराखंड की दो, पश्चिम बंगाल की चार, हिमाचल की तीन, तमिलनाडु की एक तथा बिहार व पंजाब की एक-एक सीट है। चुनाव आयोग द्वारा इसके लिए 14 जून को अधिसूचना जारी करने के साथ ही चुनाव आचार संहिता लागू हो जाएगी। है कार्यक्रम के अनुसार 21 जून को नामांकन पत्र भरने की अंतिम तिथि होगी तथा 26 जून को नाम वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। 10 जुलाई को इन सभी सीटों को भरने के लिए वोट डाले जाएंगे तथा 13 जुलाई को मत की गणना की जाएगी तथा इसी दिन चुनाव परिणाम आ जाएंगे।

जहां तक उत्तराखंड की बात है तो मंगलोर विधानसभा की सीट बसपा विधायक सरवत करीम के निधन के कारण खाली हुई थी जबकि बद्रीनाथ की सीट कांग्रेस विधायक राजेंद्र सिंह भंडारी के इस्तीफा देने और भाजपा में चले जाने के कारण खाली हुई थी। इन दोनों ही सीटों पर गैर भाजपा सदस्यों का कब्जा था। अब भाजपा की कोशिश होगी कि वह उपचुनाव में जीत दर्ज कर अपने विधायक संख्या में वृद्धि कर पाए वहीं कांग्रेस जिसका की उपचुनाव में न जीत पाने का इतिहास रहा है इन दोनों सीटों पर जीत दर्ज करने का प्रयास करेगी मंगलोर सीट पर कांग्रेस के द्वारा काजी निजामुद्दीन को चुनाव मैदान में उतारा जा सकता है जबकि भाजपा करतार सिंह भडाना पर दांव खेल सकती है जहां तक बद्रीनाथ सीट की बात है तो उम्मीद यही है कि भाजपा कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए राजेंद्र सिंह भंडारी पर ही दांव लगायेगी जबकि कांग्रेस ने अभी उम्मीदवार का कोई नाम सामने नहीं रखा है। बद्रीनाथ विधानसभा सीट में 210 पोलिंग बूथ बनाये जायेगें। बद्रीनाथ विधानसभा सीट पर 1 लाख 2 हजार 145 मतदाता एंव 2566 सर्विस मतदाता है। मंगलौर विधानसभा सीट पर 1 लाख 19 हजार 930 मतदाता और 255 सर्विस मतदाता है।

पीएम व क्षेत्र की जनता का आभारः टम्टा

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। अल्मोड़ा से लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करने वाले अजय टम्टा ने एक बार फिर केंद्रीय कैबिनेट में जगह दिए जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और क्षेत्र की जनता का आभार व्यक्त किया है। उत्तराखंड के इतिहास में यह पहली मर्तबा हुआ है जब किसी सांसद को लगातार दूसरी बार मंत्री बनाया गया है।

अल्मोड़ा सुरक्षित सीट से लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करने वाले दलित नेता अजय टम्टा अपनी बेदाग छवि व कर्तव्य निष्ठा और सौम्य स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। 2024 में उन्होंने अपने प्राप्त मतदान प्रतिशत में भी बढ़ोतरी के साथ जीत दर्ज की और यह क्षेत्रीय संतुलन और जातिगत राजनीति के साथ बेहतर समन्वय के कारण ही संभव हो सका है।

- सीएम धामी ने मंत्री बनने पर घर जाकर दी बधाई, लगातार दूसरी बार मंत्री बनने वाले पहले सांसद

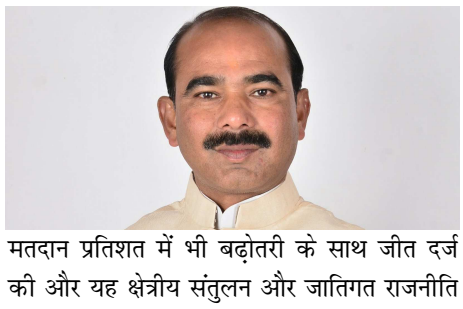

चुनाव परिणाम आने के बाद हालांकि इस बात की संभावनाएं जताई जा रही थी कि उत्तराखंड को मंत्रिमंडल में प्रतिनिधित्व तो मिलना तय है क्योंकि उत्तराखंड से भाजपा ने लगातार तीसरी बार पांच कमल जीतकर पार्टी की झोली में डाले हैं लेकिन मंत्रिमंडल में जगह किसे

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

मणिपुर में मुख्यमंत्री की सुरक्षा टीम पर उग्रवादियों ने किया हमला, 2 जवान घायल

नई दिल्ली। उग्रवादियों ने मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के सुरक्षा काफिले पर कांगपोकपी जिले में घात लगाकर सोमवार को हमला कर दिया। पुलिस ने कहा कि सीएम एन बीरेन सिंह का सुरक्षा काफिला मणिपुर के हिंसा प्रभावित जिरीबाम जिले जा रहा था, लेकिन इस दौरान अचानक कई राउंड की गोलीबारी कर दी गई। इसको देखते हुए सुरक्षाबलों ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की है। जिरीबाम भेजी गई अग्रिम सुरक्षा टीम सीएम के मंगलवार के दौरे से पहले यहां पहुंची थी। मंगलवार को सीएम को जिरीबाम का दौरा करना था।सीआईडी घ्ष्राज्य पुलिस, सीआईएसएफ जवान समेत 2 सुरक्षाकर्मी घायल इस हमले में घायल हुए हैं। एक घायल को इंफाल भेजा गया है। अधिकारियों ने बताया कि अग्रिम सुरक्षा दल इम्फाल से जिरीबाम जिले की ओर जा रहा था। तभी सुबह करीब 10.30 बजे राष्ट्रीय राजमार्ग-37 (इम्फाल-सिलचर वाया जिरीबाम) पर कांगपोकपी जिले के कोटलेन के पास टी लाइजांग गांव में हमला हुआ। इस दौरान दो सुरक्षाकर्मी घायल हो गए।

पीएम मोदी ने किसान सम्मान निधि का 20 हजार करोड़ रु. ट्रांसफर किया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पद की तीसरी बार शपथ लेते ही सोमवार को अपने कार्यालय पहुंचे, जहां उन्होंने पहुंचते ही पहले तो अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों का अभिवादन स्वीकारा। इसके बाद ऑफिस में पहुंचते ही पीएम किसान निधी से जुड़ी पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए। माना जा रहा है कि इस योजना के तहत यह 17वीं किस्ती है, जिससे लगभग 9.3 करोड़ किसानों को फायदा होगा और किसानों को सीधे 20 हजार करोड़ रुपए उनके खाते तक पहुंचेंगे। फाइल पर हस्ताक्षर करने के बाद पीएम ने कहा, ष्हमारी सरकार पूरी तरह से किसान के कल्याण लिए प्रतिबद्ध है। इसलिए यह उचित है कि कार्यभार संभालते ही जिस पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए जाएं वह किसान कल्याण

से संबंधित हो। हम आने वाले समय में किसानों के लिए और कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए और भी काम करेंगेष। यह निर्णय सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की चुनावी जीत के बाद किसानों के कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, हालांकि कुछ असफलताओं के साथ, खासकर ग्रामीण भारत के कुछ हिस्सों में। यह निर्णय सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की चुनावी जीत के बाद किसानों के कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, हालांकि कुछ असफलताओं के साथ, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान उन्हें ग्रामीण भारत में उठाना पड़ा है, उसे अब ध्यान में रखना आवश्यक हो गया है। नरेंद्र मोदी ने रविवार को रिकॉर्ड तीसरे कार्यकाल के लिए 72 सदस्यीय केंद्रीय मंत्रिपरिषद का नेतृत्व करते हुए प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली। उन्होंने केंद्रीय मंत्रिमंडल के लिए शीर्ष मोर्चे पर अमित शाह, निर्मला सीतारमण, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, एस जयशंकर और पीयूष गोयल पर भरोसा करते हुए आमूल-चूल परिवर्तन के बजाय निरंतरता को चुना। एनडीए गठबंधन की प्रमुख सहयोगी पार्टी तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) और जनता दल (यूनाइटेड) ने एक-एक कैबिनेट पद मिले, क्योंकि मोदी ने लगातार तीसरी बार पीएम के रूप में कार्यभार संभाला।

दून वैली मेल

संपादकीय

बन गई नई सरकार

नरेंद्र मोदी ने कल प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही अपना नाम तीन बार प्रधानमंत्री बनने वालों की सूची में दर्ज करा लिया है। कल संपन्न हुए शपथ ग्रहण समारोह में मोदी के साथ 72 मंत्रियों ने शपथ ग्रहण की है। जो उनके बीते दो कार्यकाल में सबसे बड़ा मंत्रिमंडल है। 2014 में उन्होंने 46 मंत्रियों के साथ तथा 2019 में 58 मंत्रियों के साथ सत्ता संभाली थी लेकिन इस बार उनके मंत्रिमंडल में 71 मंत्रियों ने शपथ ली है जो अब तक का सबसे जंबो मंत्रिमंडल है। दरअसल 2024 के इस चुनाव में बहुत कुछ अलग हुआ है जिसके कारण जंबो कैबिनेट सरकार की मजबूरी थी। राजग के सहयोगी दलों का अस्तित्व और भूमिका बढ़ने के कारण इस बार अपने सहयोगियों को कैबिनेट में प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व देकर उन्हें संतुष्ट नहीं किया जा सकता है इसलिए सरकार जिसकी जितनी भागीदारी के अनुरूप कैबिनेट में स्थान दिया जाना तथा स्टेट काम और कास्ट के हिसाब से संतुलन बनाना भी जरूरी था। वहीं दक्षिण भारत के राज्यों में अपने खुलते प्रवेश द्वार की संभावनाओं को मजबूत बनाने के लिए उन्हें भी तवज्जो देने की मजबूरी ने कैबिनेट के आकार को थोड़ा अधिक बड़ा बना दिया है। लेकिन इस कैबिनेट के चयन में कौशल दिखाने में कोई कमी उठाकर नहीं रखी गई है। 72 सदस्यीय इस कैबिनेट में 30 कैबिनेट मंत्री 35 राज्य मंत्री तथा पांच स्वतंत्र प्रभार वाले मंत्री है। अगर कास्ट के दृष्टिकोण से देखा जाए तो ओबीसी संवर्ग के 27 मंत्रियों को सरकार में शामिल कर यह संदेश दिया गया है कि सरकार उनके हितों को लेकर पूरी तरह से सजग है वही 10 दलित और पांच आदिवासियों को इस सरकार का हिस्सा बनाया गया है। दरअसल यह भागीदारी जो ओबीसी एससी एसटी को मिल सकी है उसकी वजह भी भाजपा का जो वोट प्रतिशत कम हुआ है जिसके कारण वह मात्र 240 सीटों के आसपास तक ही पहुंच सकी उसी के मद्देनजर किया गया है। 2019 के चुनाव में 303 और अब के चुनाव में 370 का लक्ष्य जिससे वह इतनी ज्यादा पिछड़ गई उसके पीछे दलित और पिछड़ों का वोट बैंक खिसकना ही अहम कारण था। यूपी जहां इसका सबसे बड़ा नुकसान भाजपा को हुआ यह उसी का परिणाम है। मोदी की इस नई सरकार में पुराने मंत्रियों को उनके काम और अनुभव के आधार पर तथा कास्ट के आधार के साथ क्षेत्र का आधार पर स्थान दिया गया है। उत्तराखंड राज्य से अल्मोड़ा से तीसरी बार सांसद चुनकर लोकसभा पहुंचने वाले अजय टम्टा को इसी वजह से मंत्रिमंडल में स्थान मिलना इसका उदाहरण है। अजय टम्टा लगातार दूसरी बार मंत्री बन सके और उन्होंने राजलक्ष्मी शाह तथा अजय भट्ट को भी पीछे छोड़ दिया। इस सरकार में 43 मंत्री ऐसे हैं जिन्हें तीन-तीन बार मंत्री रहने और काम करने का अनुभव है। वही 6 मंत्री ऐसे हैं जो राज्यों के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। भले ही उत्तर प्रदेश में इस चुनाव में भाजपा को तगड़ा झटका लगा हो लेकिन यूपी के सबसे अधिक मंत्री बनाए गए जिस कुर्मी वोट बैंक व एससी, एसटी के खिसकने से ज्यादा नुकसान हुआ उन्हें पूरी तवज्जो दी गई है मोदी ने अपनी इस टीम में राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, निर्मला सीतारमण को शामिल कर यह साफ कर दिया है की सरकार गृह, रक्षा, वित्त और विदेश जैसे अहम मंत्रालयों को अपने पास ही रखेगी सहयोगी दलों को क्या-क्या मंत्रालय दिए जाएंगे जल्द स्पष्ट हो जाएगा। हां एक अहम बात अभी भी यथावत बनी हुई है कि इस सरकार का भविष्य क्या हो सकता है। एनसीपी अजीत पवार गुट जो मंत्री पद ठुकरा चुके हैं तथा नीतीश और नायडू कब तक सरकार के साथ रहेंगे? जिस पर सरकार का भविष्य टिका है। दूसरा क्या यह एनडीए सरकार अपने पूरे 5 साल तक अस्तित्व बनाये रख सकेगी इस सवाल का जवाब आने वाला समय ही देगा।

गुरुकुलम के सदस्यों व युवाओं ने किया संग्रहालय का भ्रमण

देहरादून। आज श्री काशी विश्वनाथ गुरुकुलम् कार्यक्रम के पंचम सत्र में सेवानिवृत प्रधानाचार्य एवं राष्ट्रीय शिक्षक (राष्ट्रपति पुरस्कार) से सम्मानित प्रताप सिंह बिष्ट द्वारा निर्मित प्रताप/ तिबार संग्रहालय का प्रातः कालीन आरती के उपरांत गुरुकुलम के समस्त सदस्यों और युवाओं द्वारा भ्रमण किया गया। सभी ने अपनी संस्कृति के विषय में बिष्ट से वृहद जानकारी प्राप्त कर अपनी संस्कृति से जुड़कर आत्मसाक्षात्कार किया । तथा पौराणिक वस्तुओं के उपयोग व आवश्यक्ता के बारे में जानकारी प्राप्त की। गुरूजी ने सभी युवाओं को संग्रहालय के अतिरिक्त भविष्य निर्माण संबंधित जानकारी प्रदान कर मार्गदर्शन किया । उपरोक्त कार्य में मुकेश राणा, पारस कोटनाला, अरनव नौटियाल, अंकित ममगांई, पृथ्वीराज राणा, श्रीयम डंग आदि का विशेष सहयोग रहा।

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि।।
(ऋग्वेद १०-१८-११)

हे धरती मां ! हमारी इस जीवात्मा को हर्षोल्लास से स्वीकार करो। हमें दुख नहीं, सुख प्रदान करो। जिस प्रकार एक मां अपने शिशु को अपने आंचल में ढक कर रखती है उसी प्रकार हे धरती मां ! हमें भी तुम अपने आंचल में संभाल कर रखो।

विकास मेरे शहर का !

पिछली स्याही के आगे का हिस्सा (भाग नवाँ)

●नरेन्द्र कठैत

याद है बंधुओं! अपना दार्शनिक मंगतू दा! कल उसे धारा रोड के चौराहे पर खड़ा-सपने में देखा। ठीक वैसे ही मध्यम कद, कसा बदन और रंग सांवला। छितराई मूछें, कंधे तक झूलते लम्बे काले बाल। बदन पर एक सफेद लबादा, धूसर सा। पैरों पर-न कोई चप्पल न कोई जूता। यही तो होता था- मंगतू दा का हुलिया!

देख रहा हूँ- उसने हमारी मित्र मंडली को रोका। और फिर वैसे ही कहा- जैसे वो चार दशक पहले कहता था- 'अरे भुलों! ऐसे क्यों घूम रहे हो ! कुछ करो!'

हम पूछते थे- 'मंगतू दा! क्या करें?'

वो कहता था-'पढो और खूब पढ़ो।'

-'और फिर?'

-'काम करो!'

-'क्या काम करें?'

-'लोहा पीटो! लोहा! जैसे मैं पीट रहा हूँ!'

-'तुम लोहे को क्यों पीटते हो?'

-'मैं लोहा पीट कर उसे छलनी करता हूँ?'

-'लोहे को भी क्या कोई छलनी कर सका है?'

-'हाँ मैं करता हूँ!

-'कैसे?'

-'उसी छलनी लोहे की मैं छलनी बनाकर घर-घर बेच रहा हूँ। तुम्हें क्या मालूम? तुम तो अपनी माँ की छन्नी हुई छलनी की रोटी खा रहे हो। उस छलनी का दर्द क्या है माँ से पूछो। सुन रे भुला हरी! दस गेहूँ की रोटियाँ एक कोदे की रोटी का मुकाबला नहीं कर सकती। तुमने खाई गेहूँ की रोटी -और हमने खाई हैं कोदे की रोटी। फरक देख लो! तुमने पहन रखी है -बंडी, कमीज और उसके ऊपर से मोटी स्वेटर भी ! और देखो मैंने क्या पहना है ऊपर से नीचे तक एक धोती!'

आज भी मंगतू दा उसी रौ में कहता दिखा- 'यहाँ किनारे एक बड़ा यू.के. का पेड़ था! था कि नहीं था? अरे भाई! मुझको मालूम है वो था! बताओ! वो यू. के. का पेड़ किसने काटा? कहाँ ढूंढोगे अब उसकी जैसी छाया? जानते हो उसी पेड़ के नीचे भाई वेदानन्द बहुगुणा ने अखबार बेचकर अपना और अपने बच्चों का पेट पाला। पेड़ पुराना हो गया था -तो उसकी जगह नया तो लगता।

किसी ने कहा- 'मंगतू दा! यख हल्ला नि करा! बाटु छोड़ा! (मंगतू भाई! यहाँ हल्ला न करो! रास्ता छोड़ो)!'

मंगतू दा का सख्त जवाब था- 'ठैरा! ठैरा! जरा सुण त ल्या! बीच मा टोका-टाकी नि करा! बात खतम होण द्या! (रुको! रुको! जरा सुन तो लो! बीच में टोका-टाकी मत करो! बात खत्म होने दो!) बंधुओं एक बात और ध्यान से सुन लो! नेतागिरी से कभी 'विकास' नहीं हो सकता है। पसीना बहाने से ही 'विकास' होता है। इसलिए मौका हाथ से न जाने दो। कुछ करो!'

किसी ने पूछा - 'कुछ क्या करें बताओ!'

-'लोहा पीटो! लोहा पीटो! जैसे मैं पीट रहा हूँ। एक बात और सुनो! इसी शहर में एक लड़का था। उसका नाम था- गोकुल! मालूम है वो क्या करता था? भीख माँगता था। कितना? हाथ पसारकर कहता था- 'दे दे एक पैसा!' शहर वालों को उसे एक पैसा देना ठीक नहीं लगा। और एक दिन उसका सर फोड़ दिया। एक पैसा बड़ा समझा और गोकुल को छोटा! ' जिसने भी ये कथन सुना वो अवाक् रह गया।

सोचता हूँ! ये तो महज एक सपना था। लेकिन जैसा जीवन मंगतू ने जिया वो तो हकीकत था। सुकरात भी तो ऐसे ही जन जागरण के लिए सड़कों चौराहों पर निर्भीक घूमा होगा। 'मुझे मेरी बात पूरी कहने दो। एक नहीं दो जहर के प्याले तैयार रखो!' सुकरात ने भी तो ऐसे ही कहा होगा।

मंगतू दा! शहर की सड़कों पर कभी-कभी चलता नहीं दौड़ता था। मालूम नहीं वह क्यों दौड़ता था? यह भी मालूम नहीं वह किसकी खोज में दौड़ता था? उसके नँगे पाँवों के नीचे जब भी कोई कँकड़ चुभता था-तो वो उछल पड़ता था-उसके मुँह से भी हमें आह! नहीं 'विकास' ही सुनाई पड़ता था।

हमारी पीढी का वो 'विकास' आज गारे-मिट्टी से होता हुआ- खड़ेंजा, डामर, तारकोल तक पहुँच गया है। 'विकास' के जरिये ही हमने चिमनी से एल. ई. डी. तथा पठाल से लेकर लेन्टर वाले मकानों तक का सफर तय कर लिया है। हमारा आसन भी फटे टाट से सोफे तक पहुँचा है।

समाज ने हमारे 'विकास' का वह दौर भी बड़ी चौकस दृष्टि से देखा है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'अनामदास का पोथा' के एक पन्ने पर बेबाक लिखा है- 'पीछे की ओर देखता हूँ, विराट रिक्तता! जो कुछ करता रहा हूँ वह सचमुच क्या किसी काम का था? अपनी सीमाओं, त्रुटियों, ओछाइयों को छिपाकर अपने को कुछ इस ढंग से दिखाना कि मैं सचमुच कुछ हूँ, यही तो किया है। छोटी-छोटी बातों के लिए संघर्ष को बहादुरी समझा है, पेट पालने के लिए छीना-झपटी को कर्म माना है, झूठी प्रशंसा पाने के लिए स्वांग रचे हैं- इसी को सफलता मान लिया है। किसी बड़े लक्ष्य को समर्पित नहीं हो सकता, किसी का दुःख दूर करने के लिए अपने को उलीचकर दे नहीं सका। सारा जीवन केवल दिखावा, केवल भोंडा अभिनय, केवल हाय हाय में बीत गया।'

'अनामदास का पोथा' के इस वाक्यांश में इस कलमकार ने अपनी समूची पीढ़ी का अक्स देखा है। और-निश्चित रूप से अपनी तस्वीर देखकर अफसोस होता है। किन्तु, आज का 'विकास' क्या दूध का धुला है? वह काम हर्गिज नहीं करना चाहता है। वह भी प्रशंसा का भूखा है मित्रों!

ऐसे में किस बीज से कहें कि उसे उगना है तो उस भूमि में उगे- जो कठोर हो! सख्त हो! जिसमें मंगतू जैसा सख्स चला हो। आज भी मैं उस स्वावलंबी दार्शनिक की तनी हुई छाती और उसके नंगे पैरों के निशानात शहर भर में खोज रहा हूँ।

साभार: नरेन्द्र कठैत के फेसबुक पेज से

'लाल शरारा' आइकॉन म्यूजिक द्वारा कुमाऊंनी इन्फ्लुएंसर डे पर किया लॉन्च

हमारे संवाददाता

देहरादून। पहली बार, मशहूर कलाकार इंदर आर्या और संगीतकार मंगोली ने अपने नए गाने 'लाल शरारा' को इन्फ्लुएंसर्स के साथ आइकॉन म्यूजिक पहाड़ी के पहले कुमाऊनी इन्फ्लुएंसर डे पर लॉन्च किया गया है।

आइकॉन म्यूजिक की एम.डी. रशना पोचखानवाला ने कहा कि सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण, इन्फ्लुएंसर गानों की सफलता के लिए बहुत जरूरी हो गए हैं। आइकॉन म्यूजिक में हम उनके योगदान को महत्व देते हैं और पहले कुमाऊनी इन्फ्लुएंसर डे पर हमारे गाने को लॉन्च करके खुश हैं।

गायक इंदर आर्या ने कहा कि हम आज खुश हैं कि हमने अपने गाने को उन इन्फ्लुएंसरों के साथ लॉन्च किया है जो कुमाऊनी संगीत को प्रचारित करने में मदद कर रहे हैं। आइकॉन म्यूजिक पहाड़ी, गढ़वाली, कुमाऊनी, डोगरी और हिमाचली भाषाओं के कलाकारों और इन्फ्लुएंसरों के साथ काम करता है। यह यात्रा हिमाचल के सबसे बड़े गाने 'डुंगे नालुये' से शुरू हुई और अब कुमाऊँ के कलाकार इंदर आर्या और मंगोली के नए हिट गाने 'लाल शरारा' के साथ जारी है।

सुधारात्मक कदम उठाने की जरूरत

सतीश सिंह

भले ही भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और तेजी से दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, लेकिन अभी तक भारत में गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त विकल्प एवं अवसर उपलब्ध नहीं हैं। यही वजह है कि यहां के छात्र विदेश पढने जाते हैं। हालांकि ये छात्र वहां पढ़ाई के क्षेत्र में दुारियों से ज्यादा अपनी जान को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूंजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कमी है। भारत का कोई कॉलेज या विविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूंजी उपलब्ध कराकर प्रदान किया जा सकता है। विदेश में बड़ी संख्या में छात्रों द्वारा शिक्षा ग्रहण के कारण भारत से पूंजी का बहाव विदेशों में हो रहा है और साथ में प्रतिभा का पलायन भी हो रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार जनवरी 2023 तक 15 लाख भारतीय छात्र विदेशों में पढ़ाई कर रहे थे, जबकि 2022 में यह संख्या 13 लाख थी और 2024 में इस संख्या के 24 लाख पहुंचने की संभावना है।

2020 से 2021 के दौरान विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या में 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। भारत के टियर 2 और टियर 3 शहरों से ज्यादा बच्चे विदेश में शिक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं, जिसका कारण सामाजिक स्टेटस सिंबल और विदेश में रहने की ललक है। विदेश में पढ़ाई करने वाले छात्रों में से 20 प्रतिशत छात्र ही अपनी पढ़ाई पूरी करके विदेश से भारत वापिस लौटना चाहते हैं, जबकि 80 प्रतिशत छात्र वहीं बसना चाहते हैं। विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों में 35 प्रतिशत छात्र अमेरिका में शिक्षा हासिल कर रहे हैं। आज अमेरिका के शिक्षण संस्थानों में हर 4 छात्रों में से 1 छात्र भारतीय मूल का है। 2024 में ये छात्र विदेशों में 75 से 85 अरब डॉलर रुपए खर्च कर सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार वित्त वर्ष 2021-22 में विदेशी मुद्रा में 5 अरब रुपए खर्च किए गए। कोरोना महामारी के शुरू होने से पहले विदेशों में अध्ययनरत छात्र विदेश की अर्थव्यवस्थाओं में 24 बिलियन डॉलर का व्यय किए थे, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 1 प्रतिशत था। 2024 में इस राशि के बढक़र 80 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। अगर भारतीय छात्र विदेश पढ़ाई करने नहीं जाते तो विदेशी मुद्रा का इस्तेमाल आयात की जरूरत को पूरी करने में किया जाता, देश में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आती, अर्थव्यवस्था में मजबूती आती, देश की शिक्षा व्यवस्था मजबूत होती, देश की प्रतिभा का इस्तेमाल देश में किया जाता आदि। आंकड़ों के अनुसार चीन के बाद भारत से सबसे अधिक छात्र विदेश पढने जाते हैं। भारतीय छात्र उच्च शिक्षा जैसे, मेडिकल, इंजीनियरिंग, व्यवसाय प्रबंधन में डिग्री एवं डिप्लोमा हासिल करने के लिए चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, यूक्रेन, रूस, आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि देश जा रहे हैं। मेडिकल की डिग्री हासिल करने के लिए भारतीय छात्र लगभग 3 दशकों से रूस, चीन, यूक्रेन, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, फिलीपींस आदि देश जा रहे हैं, क्योंकि भारत में मेडिकल सीट कम होने की वजह से यहां मेडिकल की पढ़ाई बहुत ही महंगी है। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अनुसार वित्त वर्ष 2021-22 में देशभर में महज 596 मेडिकल कॉलेज थे, जहां कुल मेडिकल सीटों की संख्या महज 88,120 थी। हालांकि, इंजीनियरिंग की पढाई करने के लिए विदेश जाने के दृष्टान्त कम हैं। गाहे-बगाहे बीते कई वर्षो से विदेशों में पढ़ रहे भारतीय छात्रों की हत्या और उनके साथ भेदभाव व्यवहार किया जा रहा है, लेकिन कोरोना महामारी और रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध शुरू होने के बाद विदेश में अध्ययनरत छात्रों की सुरक्षा को लेकर ज्यादा चिंता महसूस की गई, क्योंकि इस अवधि में अनेक देशों में हजारों छात्र कोरोना महामारी के शिकार बने। वहीं, महामारी के दौरान आस्ट्रेलिया के शिक्षा संस्थानों में पढ़ रहे छात्रों के लिए वहां की सरकार ने देश की सीमाएं भी बंद कर दी थी।

इससे इतर, रूस एवं यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध के कारण युद्ध के शुरु आती दौर में यूक्रेन में 20,000 से अधिक छात्र फंस गए थे। कुछ महीने पहले भी कनाडा में कुछ कॉलेज के बंद होने के कारण सैकड़ों भारतीय छात्र प्रभावित हुए। पिछले दिनों किर्गीस्तान की राजधानी बिशकेक में कुछ भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमला हुआ। फरवरी 2024 में अमेरिका के सेंट लुईस स्थित वाशिंगटन विविद्यालय के छात्र अमरनाथ घोष की हत्या कर दी गई। विदेश मंत्रालय के अनुसार 2018 से अब तक विदेशों में पढ़ रहे 400 से अधिक छात्रों की मौत हो चुकी है, जिनमें कुछ प्राकृतिक मौत थी तो कुछ हत्या। छात्रों की सबसे अधिक मौत कनाडा में हुई है।

भारतीय छात्रों की विदेश में की जा रही हत्या या उनपर किए जा रहे जानलेवा हमले या नस्लीय टिपण्णी या भेदभाव की स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार को अंतरराष्ट्रीय संधि की संख्या बढ़ानी चाहिए। सरकारी मेडिकल व इंजीनियरिंग कालेजों में सीटों की संख्या बढ़ानी चाहिए। छात्र बीमा योजना शुरू किया जाना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा के क्षेत्र में जमीनी स्तर पर सुधार एवं ज्यादा से ज्यादा निवेश, नवोन्मेष और अनुसंधान को बढ़ावा, देश में रोजगार की बेहतर स्थिति, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, देश में सुशासन और हर स्तर पर सिस्टम को पारदर्शी बनाने की जरूरत है। कभी पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने विदेश में पढ़ रहे भारतीय छात्रों को देश का ब्रांड एंबेसडर कहा था और इंग्लैंड के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने वहां पढ़ाई कर रहे भारतीय छात्रों को दोनों देशों के बीच का जीवंत सेतु माना था, लेकिन आज इन भारतीय छात्रों की जान वौंक स्तर पर सांसत में फंसी हुई है। अस्तु, मामले में सरकार द्वारा सुधारात्मक कदम उठाने की जरूरत है।

लोक कला के नाम पर अश्लीलता परोसना शर्मनाक

हिमानी रावत

वर्तमान परिदृश्य में लोककला के नाम पर अश्लीलता परोसी जा रही है, जो कि चिंतनीय व शर्मनाक है। यह न केवल इन परंपरागत शैलियों को धूमिल कर रहा है बल्कि विदेशी वेस्टर्न के चक्कर में हम अपनी पहचान से दूर होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया या यूट्यूब, फिल्म हो या टीवी के कार्यक्रम सभी जगह फूहड़ नाच का नंगा प्रदर्शन किए जाने की परंपरा ने जोर पकड़ लिया है। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर रिल्स, गानों, फिल्मों, कार्यक्रमों सब में अश्लीलता इस कदर घर करती जा रही है कि आप अपने परिवार के साथ देख ही नहीं सकते। और रही सही कसर अब नंगे होकर रील बनाने वालों ने पूरी कर दी है। अधिकतर गाने, एलबम और सिनेमा अश्लीलता से भरपूर है। आज के लोक गीत सुनने की ही बात कर लें तो उन गानों के हर शब्द में अश्लीलता कूट-कूट कर भरा होता है। जब हम- आप परिवार के साथ मिलकर गाना नहीं सुन सकते तो यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन गानों के सीनों का क्या हाल होगा। ऊपर से अश्लीलता का कम्पीटिशन इस कदर होता जा रहा है कि एक से एक हिट एलबम, गाने बनते हैं। अश्लीलता को दिखाने का होड़ इस कदर है कि मत पूछिए। इस बारे में कलाकारों, गायकों से पूछ लिया जाता है तो छूटते ही कहते हैं कि यह तो पब्लिक डिमांड है। जनता यही सब देखना पसंद करती है। ऐसा न परोसें तो गाना हिट ही नहीं होगा।

अब ऐसे कलाकारों को कौन समझाए कि अश्लीलता की शुरुआत तो फिल्मों व गानों के जरिए ही हमारे समाज में फैली। जिसे रोकने का कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया गया। ऐसे मजनू कलाकारों के चक्कर में हमारा पूरा समाज दूषित होता जा रहा है। मान-मर्यादा सब छिन्न-भिन्न होता जा रहा है। यदि आज भी हम नहीं सचेते तो न जाने हमारे समाज की दशा और दिशा क्या होगी। ऐसा नहीं है कि ऐसे नृत्यों का असर नहीं हो रहा है। पिछले 5-10 सालों में जिस प्रकार का नृत्य व गाने प्रस्तुत किए हैं, उसने तो हमारे समाज के ताना-बाना को ही हिलाकर रख दिया है। ये मन को शांत करने के बजाय अशांत ही कर देता है।बाजार की लालची और मुनाफाखोर प्रवृत्ति ने एक लोककला की हत्या कर दी और अब उसके नाम पर लोगों को अश्लीलता परोस रही है। इन्टरनेट ने बेशक लोगों तक ज्यादा सूचनाएं पहुंचाई है लेकिन इसने ग्रामीण सौंदर्य बोध और मान-मर्यादा को खंडित कर दिया। वह हर चीज को अधिक बिकाऊ बनाने के लिए अश्लीलता की सारी हदें पार कर दी। कुल मिलाकर यह आसानी से देखा जा सकता है कि इन्टरनेट के विस्तार और मोनेटाइजेशन ने ऐसी सामग्री को बढ़ावा दिया है जो बहुत ज्यादा देखी जा रही है लेकिन मानवीय संवेदनाओं पर उसने घातक प्रहार किया है। संगीत की शालीनता पर फूहड़पन भारी वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं आशिक मिजाज गीतकार जिससे देशभर में लम्पटीकरण भरे गीतों के प्रचलन से संस्कृति को गहरी चोट पहुंची है।

आधुनिकता की चकाचौंध में हमारी संस्कृति व विरासत से जुड़े गीत न जाने कहां गुम से हो गए हैं और प्रचलन बढ़ा उन मद भरे गीतों का, जिनमें से संस्कृति व सौन्दर्य गायब होकर उपहासित हो गई है। लम्पटीकरण के शब्द गीतों में भर आए हैं। वर्तमान में तथाकथित रचनाकारों द्वारा रचित गीतकारों, मजनू गायकों द्वारा गाये हुए गीतों में पाश्चात्य संस्कृति की तर्ज पर नंगापन आ गया है।

इन अलफाजों में गीत गाने वाले गायकों को इतनी भी शर्म नहीं है कि जिस अंदाज में वे अपने शब्दों को व्यक्त कर रहे हैं व अंदाज जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काटने जैसा है। यही अंदाज संस्कृति पर गहरी चोट मार रहा है। लोक गायकों के नाम पर अश्लील लिंक्स से सोशल मीडिया बाजार भरा पड़ा है। कई चैनलों पर भी इस तरह के गीतों का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ा है। गीत बिकवाने की होड़, व्यूज और लाइक्स के जरिए पैसा कमाने की लालसा, इन सबने पहले ही संस्कृति व विरासत धूमिल कर डाली है क्योंकि गीत संगीत ही एक ऐसा माध्यम होता है जो समाज को संदेशों का पैगाम देती है। आज ये पैगाम अपनी दिशा बदल चुके हैं। विभिन्न बस स्टेशनों, चलने वाले विभिन्न जीप-कार, बसों में जो गीत सुनने को मिलते हैं उनमें छिछोरापन व लम्पटीकरण का अंदाज साफ झलकता है। इन गीतों का श्रवण विशेषकर युवा वर्ग आनंदपूर्वक करता है। कई अवसरों पर शादी-व्याह आदि उत्सवों में कुछ बुजुर्ग जन भी इस तरह के गीतों पर जमकर ठुमके लगाते हैं।

सांस्कृतिक परम्परा पर चिंतन करने वाले लोग इसे लोक संगीत पर गहरी ठेस मानते हैं। आशिकी अंदाज के साथ पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आकर गीत गाने वाले गायक-गायिकाएं, नायक-नायिकाएं धीरे-धीरे सांस्कृतिक पहरूओं की नजर का कांटा बनते जा रहे हैं। ऐसा मालूम पड़ता है यदि इन्हीं गीतों का दौर अश्लीलता की पराकाष्ठा लांगता रहा तो इस तरह के लोगों का सामाजिक बहिष्कार जरूरी हो सकता है। आज के गानों में बंदूक, दारू, लड़कीबाजी व अश्लीलता का आयाम देखने को मिल रहा है जो कि हमारी संस्कृति के लिए और गानों के लिए बहुत ज्यादा हानिकारक है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

कई लोगों को हैं दांतों की सफाई से जुड़े ये भ्रम!

दांत सफेद होने से न सिर्फ आपकी मुस्कुराहट खूबसूरत लगती है, बल्कि यह मुंह के स्वस्थ होने का भी प्रतीक हैं। इसी कारण लोग दांतों को साफ रखने के लिए तरह-तरह की तरकीब आजमाते हैं। हालांकि घरेलू नुस्खों और बाहरी प्रोडक्ट्स की भरमार के कारण कई बार तथ्यों और भ्रमों के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है और इससे दांतों को नुकसान हो सकता है। चलिए आज आपको दांतों की सफाई से जुड़े भ्रम और उनकी सच्चाई बताते हैं।

भ्रम- हार्ड टूथब्रश से दांत साफ और सफेद रहते हैं

शायद यह सबसे आम भ्रम है कि हार्ड टूथब्रश से दांत साफ और सफेद रहते हैं, जबकि ऐसा कुछ नहीं है। हार्ड ब्रश दांतों को साफ करने से ज्यादा दांतों की सतहों और मसूड़ों को नुकसान पहुंचाता है। इसलिए जरूरी है कि आप सॉफ्ट टूथब्रश का इस्तेमाल करें और अपने ब्रश करने के तरीके पर ध्यान दें। ऊपरी दांतों को साफ करने के लिए नीचे की ओर से और निचले दांतों को ऊपर की ओर से ब्रश करें। भ्रम- दांत में दर्द या कीड़ा लगने पर ही दंत चिकित्सक के पास जाना चाहिए

यह भी सिर्फ एक भ्रम है कि दांत में दर्द या कीड़ा लगने पर ही दंत चिकित्सक यानि डेंटिस्ट के पास जाना चाहिए, जबकि ऐसा नहीं है। एक अच्छी ओरल हेल्थ के लिए हर छह महीने में एक बार दंत चिकित्सक के पास जाएं और अपने दांतों की सफाई और चेकअप कराएं, ताकि कोई भी समस्या से समय पर ही निपटा जा सके। इस तरह से आपके दांत स्वस्थ बने रहेंगे।

भ्रम- जब मसूड़ों से खून आ रहा हो तो आपको टूथब्रश करना बंद कर देना चाहिए

कई लोग इस बात को सच मानते हैं कि जब मसूड़ों से खून आ रहा हो तो आपको टूथब्रश करना बंद कर देना चाहिए, लेकिन यह बात पूरी तरह से गलत है। अगर टूथब्रश करते समय आपके मसूड़ों से खून आए तो तुरंत दंत चिकित्सक से मिलें क्योंकि मसूड़ों से खून तभी बहता है, जब आप अपने दांतों को ठीक से साफ नहीं करते हैं या फिर कोई अन्य समस्या हो। डॉक्टर की सलाह पर आगे कदम उठाएं।

भ्रम- ओरल हेल्थ आपके स्वास्थ्य से संबंधित नहीं

एक भ्रम यह भी है कि ओरल हेल्थ का समग्र स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन यह एक गलत अवधारणा है क्योंकि मुंह और शरीर के बीच सीधा संबंध होता है और ओरल हेल्थ आपके समग्र स्वास्थ्य से जुड़ी है।

दरअसल, हमारा खाना हमारे मुंह से होकर जाता है, इसलिए मुंह साफ न होने पर कोई भी जीवाणु या संक्रमण मुंह से शरीर में प्रवेश कर सकता है और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

एफपीओ किसानों की उन्नति के पर्याय

संजीव मिश्र

उत्तम खेती मध्यम बान, निषिध चाकरी भीख निदान अर्थात खेती सबसे अच्छा काम है, व्यापार मध्यम है, नौकरी निषिद्ध है और भीख मांगना सबसे बुरा काम है।

जनकवि घाघ ने जब यह दोहा लिखा होगा उस समय खेती-किसानी न सिर्फ सम्मानजनक पेशा था, बल्कि किसान सबसे ज्यादा खुशहाल था। लेकिन आजादी के बाद कृषि क्षेत्र की उपेक्षा के चलते हालात इस कदर बिगड़ गए कि कृषि न केवल घाटे का सौदा बन गई, बल्कि किसान आत्महत्या करने को विवश हुआ। अब जलवायु परिवर्तन के चलते हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।

अध्ययनों की मानें तो अकेले भारत में 2०5० तक वर्षा-आधारित चावल की पैदावार 2० प्रतिशत और 2०8० में 47 प्रतिशत तक की कमी की आशंका है। जलवायु परिवर्तन पर केंद्रित संयुक्त राष्ट्र के अंतरसरकारी पैनल की हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि अगले दो दशकों में वैंक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस या इससे भी अधिक की बढ़ोतरी होगी जिसका असर पानी की उपलब्धता से लेकर कृषि और खाद्य सुरक्षा पर पड़ेगा। भारत सरीखे देशों को तो ग्लोबल वार्मिंग से उपजी परिस्थितियां खास परेशान करेंगी क्योंकि भूजल का 89 प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र ही उपयोग करता है। इसलिए तापमान बढने से भारत जैसे देशों में खेती पर दूरगामी असर पड़ेंगे। भारत में दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी रहती है, मगर कुल वैंक जल संसाधनों का 4 प्रतिशत ही उपलब्ध है। बावजूद इसके आजादी के बाद दशकों तक सरकारों द्वारा कोई ठोस प्रयास नहीं किया जाना समझ से परे है।

दरअसल, सरकारों के लिए किसान राजनीतिक मोहरा रहे जिन पर राजनीति तो खूब हुई लेकिन उनकी स्थिति सुधारने, आमदनी बढ़ाने, खेती को घाटे से फायदे का सौदा बनाने के प्रति गंभीर प्रयास नहीं किए गए। यही वजह है कि किसानों की स्थिति में सकारात्मक सुधार नहीं हुए। इस लिहाज से पिछला दशक भविष्य के प्रति आस्त करता है। 2०14 में सरकार बनने के बाद से ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों की आय बढ़ाने के साथ टिकाऊ खेती की योजना बनाई। 2०16 में सरकार ने कृषि आय को दोगुना करने के तरीकों का सुझाव देने के लिए गठित समिति की सिफारिशों पर तेजी से अमल किया जिसमें सबसे अहम है प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना। दुनिया की सबसे बड़ी डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर स्कीम माने जाने वाली इस योजना में देश के 11 करोड़ से अधिक किसानों को 2.61 लाख करोड़ रु पये से अधिक का लाभ मिला है।

सरकार किसानों को कई तरह की सब्सिडी भी दे रही है। फर्टलाइजर सब्सिडी का बजट ही प्रति वर्ष 2 लाख करोड़ रु पये से अधिक है। सरकार टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने और वित्तीय अनुशासन बनाए रखने के प्रति भी सजग है। एक राष्ट्र-एक फर्टलाइजर जैसी पहल, नीम और सल्फर कोटेड यूरिया इस दिशा में उठाया गया ठोस कदम है। सरकार अब पर ड्राप, मोर क्रॉप का लक्ष्य, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी सूक्ष्म सिंचाई टेक्नोलॉजी को अमल लाकर जल उपयोग दक्षता को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए एक सूक्ष्म सिंचाई कोष की स्थापना भी की गई है जिसके लिए राज्यों को 18,००० करोड़ से अधिक की केंद्रीय सहायता जारी की गई है। सरकार कृषि में व्यापक बिजली खपत के लिए सौर ऊर्जा का विकल्प भी दे रही है।

समय अब परंपरागत खेती की जगह अत्याधुनिक संसाधनों से खेती का है। खुद प्रधानमंत्री भी अक्सर इनोवेटर्स और रिसर्चर्स से आग्रह करते हैं कि प्रति इंच जमीन पर 'अधिकाधिक फसल' के बारे में सोचें। कृषि आय बढ़ाने की दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता को बजट से आंका जा सकता है। कृषि और संबद्ध गतिविधियों के बजट को 4.35 गुना बढ़ाकर 2०13-14 के 3०,223 करोड़ से 2०23-24 में 1.3 लाख करोड़ रु पये से अधिक किया गया है। सरकार भी प्रत्येक किसान को किसी न किसी रूप में औसतन 5०,००० रु पये प्रदान कर रही है।

इन सबके सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं। एनएसएसओ के हालिया सिचुएशन असेसमेंट सर्वे (2०18-19) के अनुसार, मासिक कृषि घरेलू आय 2०12-13 में 6,426 से बढ़कर 2०18-19 में 1०,218 रु पये हो गई। दरअसल, मोदी सरकार ने 'सहकार से समृद्धि' के स्वप्न को साकार करने हेतु एफपीओ के गठन का निर्णय लिया था। आज एफपीओ किसानों की उन्नति के पर्याय बन गए हैं। अकेले समुन्नति संस्था 65०० से अधिक एफपीओ के साथ मिल कर 8 लाख से अधिक किसानों के जीवन में बदलाव लाई है। समुन्नति के माध्यम से सकल लेन देन का आंकड़ा 22,००० करोड़ से ऊपर पहुंच गया है। सरकार को इन संस्थाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि किसानों की आमदनी बढ़ने के साथ-साथ खेती फायदे का सौदा साबित हो सके।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *साध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

-प्रबंधक विज्ञापन

गोदी में लेकर चला रहे हैं लैपटॉप तो हो जाएं सावधान, खराब हो सकती है फर्टिलिटी

लैपटॉप को गोद में लेकर काम करते हैं तो सावधान हो जाइए, क्योंकि इससे सेहत को गंभीर नुकसान हो सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, बहुत से लोग गोद में लैपटॉप रखकर काम करते हैं, जो अपनी हेल्थ से खिलवाड़ कर रहे हैं। इससे न सिर्फ खराब फर्टिलिटी बल्कि अनिद्रा जैसी समस्याएं हो सकती हैं। जिससे कई दिक्कतें शुरू हो सकती हैं। आइए जानते हैं लैपटॉप गोद में लेकर इस्तेमाल करने से क्या-क्या खतरे हो सकते हैं।।।

स्किन हो सकती है खराब

लैपटॉप से निकलने वाली गर्म हवाएं स्किन के लिए हानिकारक होती हैं। इससे स्किन जलने लगती है, जिसे टोस्टेड स्किन सिंड्रोम कहते हैं। लैपटॉप से निकलने वाले हीट से त्वचा पर ट्रांसिएंट रेड रैशेज निकल सकते हैं। एक मेडिकल रिपोर्ट में बताया गया है कि लंबे समय तक अगर स्किन लैपटॉप या इस तरह के डिवाइस संपर्क में रहती है तो कई समस्याएं हो सकती हैं।

गोद में लैपटॉप लेकर ज्यादातर लोग गलत मुद्रा में घंटों-घंटों बैठे रहते हैं। जिससे कमर में असहनीय दर्द हो सकते हैं। इसका असर मेंटल हेल्थ पर पड़ सकता है। इससे बचना है तो आज से ही लैपटॉप का यूज टेबल पर रखकर ही करें।

खराब फर्टिलिटी

अमेरिकन सोसाइटी फॉर रिप्रोडक्टिव मेडिसिन ने एक स्टडी में पाया है कि गोद में लैपटॉप रखकर इस्तेमाल करने से फर्टिलिटी खराब हो सकती है। लैपटॉप से निकलने वाली गर्म हवाएं स्पर्म काउंट और उसकी क्वालिटी कम कर सकती है। इससे गंभीर समस्याएं हो सकती हैं।

आई स्ट्रेन

लैपटॉप अगर लंबे समय तक गोद में रखकर बैठते या इस्तेमाल करते हैं तो इसका असर आंखों पर भी पड़ता है। इससे आंखों में खिंचाव, सूखापन या सिरदर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं। लैपटॉप लेकर पैरों को चिपकाकर बैठने से उसका रेडिएशन सीधे शरीर पर पड़ सकता है, जो खतरनाक हो सकता है।

किन लोगों को हीट वेव का है सबसे ज्यादा खतरा

हीट वेव से बच्चे, बुजुर्ग, प्रेग्नेंट महिलाएं और फिल्ड में काम करने लोगों के लिए समस्याएं खड़ी कर सकती है। आइए जानें इससे बचाव करने का तरीका।

दिल्ली-नोएडा सहित नॉर्थ इंडिया के ज्यादातर राज्यों में भीषण गर्मी पड़ रही है। दिल्ली का पारा इन दिनों 45 डिग्री का पार पहुंच गया है। इस दौरान बच्चे, बुजुर्ग और प्रेग्नेंट महिलाओं को बचकर रहने की जरूरत है।

बच्चे की इम्युनिटी काफी ज्यादा कमजोर होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे का शरीर तापमान को झेल नहीं पाता है। यही कारण है कि बच्चों को बहुत जल्दी लू लग जाती है।

बुजुर्गों का शरीर काफी ज्यादा कमजोर होता है। ऐसी स्थिति में वह कई सारी बीमारियों से जूझते हैं। हीट वेव के कारण दिल, फेफड़ा और डायबिटीज की बीमारी हो सकती है। डायबिटीज और हाई बीपी की समस्या भी हो सकती है।

जो लोग फिल्ड वर्क करते हैं। उन्हें अपनी सेहत का खास ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि चिलचिलाती धूप में काम करना अपने आप में बेहद टफ काफ है। इसके कारण डिहाइड्रेशन, उल्टी और दस्त की समस्या हो सकती है।

प्रेग्नेंट महिलाएं को गर्मी आम लोगों के मुकाबले काफी ज्यादा लगती है। इस मौसम में गर्भवती महिलाओं को थकान और हीट स्ट्रोक का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है।

हीट वेव के दौरान पानी वाले फल खाएं जैसे- तरबूज, खरबूज, अंगूर और संतरे जैसी मौसली फल खाएं। ताकि शरीर हाइड्रेटेड रहें। साथ ही खूब पानी पिएं और फाइबर से भरपूर फल खाएं।

शब्द सामर्थ्य -106

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. जीत, फतेह 3. राशन सामान बेचने वाली एक जाति, वैश्य 6. मुर्गी की जाति की एक पक्षी, आधा... आधा बटेर 7. कमल, पंकज, भारत के एक दिवंगत प्रधानमंत्री का नाम 8. नहाने का स्थान, स्नानागार 10. ख्वाब, स्वप्न 12. बुलावा, निमंत्रण 14. तबाही, बर्बादी 17. कत्ल, वध 18. क्षतिपूर्ति, मुआवजा 19. करार, चैन, आराम 21. दृष्टि, निगाह 23. नाश करने योग्य 24. लाडला, प्यारा 25. सीताजी, जनकनंदनी।

ऊपर से नीचे

1. शादी, ब्याह 2. अनाथ, निराश्रित 3. साल, वर्ष 4. दोस्ताना, यारी 5. सुर, देव, भगवान 9. मनुष्य, इंसान, आदमी 11. पाटा जाना, चुकता करना, बात तय करना 12. कार्यक्षेत्र, गोल घेरा, वृत्त 13. अधीनता, मातहती, अधिकार 15. नगर 16. गैरजरूरी 20. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 22. धरती, भूतल, धरातल।

1		2	■	3		4	■	5
	■	6			■	7		
8		9	■	10	11		■	
■		■	■	■		■	■	■
12		13	■	14		15	■	16
	■	17		■	■	18		
19	20		■	21	22		■	
■		■	■	■		■	23	
24			■	25			■	

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 105 का हल

अं	त	■	म	री	ज	■	■	■
ग	ह	न	ता	■	ब	र	ब	स
■	की	■	धि	क्का	र	■	र	मा
■	का	■	का	■	द	वा	खा	ना
प	त	वा	र	■	स्त	र	■	■
ह	■	■	■	■	■	दा	मि	नी
ना	■	ए	ह	ति	या	त	■	लां
वा	च	क	■	हा	■	■	खू	ब
■	■	ता	ब	ड़	तो	ड़	■	र

बॉक्स ऑफिस पर श्रीकांत की कमाई चौथे सप्ताह में भी जारी

फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही से पहले राजकुमार राव की एक और फिल्म श्रीकांत सिनेमाघरो में दर्शकों के मनोरंजन के लिए लगी हुई है।यह फिल्म दृष्टिहीन उद्योगपति श्रीकांत बोला की बायोपिक है। फिल्म में राजकुमार ने श्रीकांत बोला का किरदार निभाया है।भले ही यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करने में असफल रही हो, लेकिन अभिनेता की अदाकारी और फिल्म की कहानी दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बनाने में कामयाब रही है।

अब श्रीकांत के 26वें दिन के कमाई के आंकड़े भी सामने आए हैं। यह अब तक का सबसे कम कारोबार है।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, श्रीकांत ने चौथे मंगलवार 35 लाख रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 44.95 करोड़ रुपये हो गया है।फिल्म की कहानी हमें बोला के जन्म से लेकर एक सफल उद्योगपति बनने तक का सफर बड़ी खूबसूरती से दिखाती है।सिनेमाघरों के बाद श्रीकांत ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर दस्तक देगी।

श्रीकांत में अलाया एफ, ज्योतिका और शरद केलकर जैसे कलाकार अहम भूमिका में हैं। इसका निर्देशन तुषार हीरानंदानी ने किया है, वहीं भूषण कुमार, कृष्ण कुमार और निधि परमार इसके निर्माता हैं।अब राजकुमार जल्द श्रद्धा कपूर के साथ फिल्म स्त्री 2 में नजर आएंगे।

फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो भी उनके खाते से जुड़ी है, जिसमें अभिनेत्री तृप्ति डिमरी उनकी जाड़ीदार बनी हैं।ड्रीम गर्ल 2 के निर्देशक राज शांडिल्य इसका निर्देशन कर रहे हैं।

अजय देवगन की फिल्म मैदान ने ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर दी दस्तक

अजय देवगन की फिल्म मैदान को इसी साल ईद के खास मौके पर यानी 11 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था, लेकिन यह बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी।

24० करोड़ रुपये की लागात में बनी इस फिल्म ने 51.39 करोड़ रुपये का कारोबार किया था।अब मैदान ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर दस्तक दे चुकी हैं।अगर आपने इस फिल्म को सिनेमाघर में नहीं देखा है तो अब घर बैठे देख सकते हैं।

मैदान की कहानी फुटबॉल कोच सैयद अब्दुल रहीम पर आधारित है, जिनके मार्गदर्शन में भारतीय फुटबॉल टीम ने 1951 और 1962 के एशियाई खेलों में जीत हासिल की थी। इस दौर को भारतीय फुटबॉल का स्वर्ण युग कहा जाता है।इस फिल्म में अजय के अलावा प्रियामणि, गजराज राव, बोमन ईरानी और रुद्रनील घोष जैसे कलाकार भी अहम भूमिका में हैं।मैदान का निर्देशन अमित शर्मा ने किया है। बोनी कपूर इस फिल्म के निर्माता हैं।

वर्क फ्रंट की बात करें तो इन दिनों अजय देवगन के पास फिल्मों की भरमार है. वह 'सिंघम अगेन' में नजर आएंगे. रोहित शेट्टी के निर्देशन में बनी रही इस फिल्म के सेट से अजय देवगन की कई तस्वीरें सामने आ चुकी हैं. इसके अलावा उनकी 'औरों में कहां दम था' का भी ऐलान हो चुका है. अजय देवगन 'रेड 2' और 'दे दे प्यार दे 2' जैसी मूवीज में दिखेंगे. ये सभी फिल्में एक के बाद एक सिनेमाघरों में दस्तक देंगी.

बॉक्स ऑफिस पर मिस्टर एंड मिसेज माही की कमाई में गिरावट

जाह्नवी कपूर और राजकुमार राव की फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही बॉक्स ऑफिस पर ठीक-ठाक कमाई कर रही है।रूही के बाद यह जाह्नवी-राजकुमार के बीच दूसरा सहयोग है और दोनों की शानदार केमिस्ट्री ने दर्शकों का दिल जीत लिया है।वीकेंड पर बॉक्स ऑफिस पर बढिया प्रदर्शन करने के बाद अब कामकाजी दिनों में मिस्टर एंड मिसेज माही की कमाई की रफ्तार धीमी हो गई है।आइए जानते हैं पांचवें दिन फिल्म के खाते में कितने करोड़ रुपये आए।

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, मिस्टर एंड मिसेज माही ने रिलीज के पांचवें दिन यानी मंगलवार को 2.1० करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 21.1० करोड़ रुपये हो गया है।मिस्टर एंड मिसेज माही ने 6.75 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर शानदार शुरुआत की थी। दूसरे दिन इस फिल्म ने 4.6० करोड़ रुपये और तीसरे दिन 5.5० करोड़ रुपये कमाए।चौथे दिन यह फिल्म 2.15 करोड़ रुपये कमाने में सफल रही।

फिल्म में आप देख पाएंगे कि राजकुमार राव इस फिल्म में महेंद्र के किरदार में नजर आ रहे हैं। जिन्होंने बचपन से ही क्रिकेटर बनने के सपना देखा होता है, लेकिन पिता नहीं चाहते कि वह क्रिकेट खेलें।इस वजह से उन्हें अपने सपने को छोडऩा पड़ा, लेकिन ये सपना वह अपना पत्नी जाह्नवी कपूर (महिमा) से पूरा करवाते हैं।वैसे तो उनकी पत्नी पेशे से डॉक्टर होती हैं, लेकिन वह पति के कहने पर क्रिकेट खेलती हैं।

सूर्या की कांगुवा में दिखेगा जबदस्त एक्शन, हॉलीवुड के एक्शन और सिनेमेटोग्राफी एक्सपर्ट्स ने संभाली कमान

कांगुवा इस साल रिलीज होने वाली सबसे बड़ी और धमाकेदार फिल्म होने वाली है। मेकर्स इस फिल्म के जरिए अलग तरह का विजुअल एक्सपीरिएंस देना चाहते हैं। इस फिल्म में बॉबी देओल खलनायक की भूमिका में हैं, वहीं सूर्या वीर योद्धा के किरदार में लोगों के छक्के छुड़ाएंगे। फिल्म में दोनों के बीच घमासान युद्ध देखने को मिलेगा। इस फिल्म में रियल लोकेशन पर कमाल के एक्शन सीन्स देखने को मिलने वाले हैं। 35० करोड़ में बन रही इस फिल्म को एक्शन सीन्स और भी ज्यादा दिलचस्प बनाएंगे।

कांगुवा एक बड़ी फिल्म होने वाली है, इसलिए मेकर्स ने बिना किसी समझौते के हॉलीवुड के एक्सपर्ट्स को एक्शन और सिनेमेटोग्राफी जैसे तकनीकी विभागों के लिए बुलवाया है। यह चीज सुनिश्चित करती है कि फिल्म में अगले लेवल का एक्शन होने वाला है। कांगुवा इस साल की सबसे एंबिशियस फिल्म है। ऐसे में मेकर्स ने दर्शकों के लिए एक सिनेमेटिक मास्टरपीस लाने के लिए किसी तरह की कसर नहीं छोड़ी है। ऐसा इसलिए ताकि यह दर्शकों के बीच एक यादगार फिल्म बन जाए। कांगुवा की दुनिया असली और सॉलिड होगी और दर्शकों को एक नया विजुअल अनुभव कराएगी। मानवीय भावनाएं, दमदार प्रदर्शन और बड़े पैमाने पर पहले कभी नहीं देखे गए एक्शन सीन्स फिल्म का मूल होंगे।

हाल ही में मेकर्स केरल और कोडईकनाल के जंगलों में सूर्या के साथ एक अहम सीन फिल्माए हैं। पिछले अक्टूबर में मेकर्स ने बैंकॉक में तीन हफ्ते के शेड्यूल में शूटिंग की थी। मेकर्स ने एक्शन सीन्स को और ज्यादा बेहतर बनाने के लिए खास कैमरों का इस्तेमाल किया है। फिल्म में दो अलग-अलग युगों की कहानी है, इसी वजह से अतीत और वर्तमान में कहानी चलेगी, जो 1००० साल की कहानी को दिखाएगी। मेकर्स ने ये ध्यान में रखा है कि दोनों समय को दर्शकों के सामने खूबसूरती से पेश किया जा सके ताकि यह उनके लिए एक यादगार अनुभव बन सके।

बता दें, शिवा ने फिल्म के लेखन से लेकर निर्देशन का काम देखा है। इस फिल्म में सूर्या, बॉबी देओल, जगपति बाबू और दिशा पटानी लीड रोल में हैं। फिल्म का म्यूजिक रॉकस्टार देवी श्री प्रसाद ने दिया है। वहीं सिनेमैटोग्राफी वेट्री पलानीसामी ने की है। बताया जा रहा है कि यह फिल्म इस साल के अंत तक रिलीज हो सकती है।

बॉक्स ऑफिस पर नहीं चला मनोज बाजपेयी की फिल्म भैया जी का जादू

इन दिनों अभिनेता मनोज बाजपेयी खूब चर्चा में हैं और हों भी क्यों न, उनकी फिल्म भैया जी सिनेमाघरों में जो लगी हुई है। हालांकि, इस फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली है।पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने कमाल नहीं किया और दूसरे दिन की कमाई के आंकड़े भी सामने आ गए हैं।कयास लगाए जा रहे थे कि फिल्म को वीकेंड की छुट्टी का फायदा मिलेगा, लेकिन भैया जी का भौकाल नहीं चल पाया।

भैया जी की कहानी राम चरण उर्फ भैया जी किरदार के इर्द-गिर्द घूमती है, जो बिहार का बाहुबली है। उसने कई सालों पहले हिंसा का रास्ता छोड़ दिया था, लेकिन जब उसके छोटे भाई की हत्या हो जाती है तो वह एक बार फिर हथियार उठा लेता है। अब वह अपने भाई की हत्या का बदला लेना चाहता है।फिल्म के निर्देशक अपूर्व सिंह कार्की हैं। भैया जी मनोज के लिए खास है, क्योंकि यह उनकी 1००वीं फिल्म है।

मनोज जल्द ही कनु बहल के निर्देशन में बनी फिल्म डिस्पैच में भी मुख्य भूमिका निभाएंगे। इसमें वह एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभा रहे हैं, जो खुद को व्यापार और अपराध की दुनिया की दलदल में फंसा हुआ पाता है।फिल्म में मनोज के साथ अभिनेत्री शहाना गोस्वामी अहम भूमिका में हैं। यह फिल्म अपराध पत्रकारिता की दुनिया पर आधारित है।उधर बर्लिन अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित हो चुकी उनकी फिल्म द फेबल भी रिलीज होने वाली है।

वही दूसरी ओर मामूट्टी की फिल्म टर्बो का जादू थिएटर्स में चल गया है और फिल्म दर्शकों को खूब एंटरटेन भी कर रही है। फिल्म 23 मई, 2०24 को सिनेमाघरों में रिलीज की गई थी और रिलीज के साथ ही इसने बॉक्स ऑफिस पर अपना कब्जा जमा लिया। मामूट्टी स्टारर फिल्म टर्बो खुद एक्टर ने ही प्रोड्यूस किया है। फिल्म में सुनील वर्मा, अंजना जयप्रकाश, कबीर दूहन सिंह और राज बी शेट्टी भी अहम भूमिकाएं अदा करते नजर आए हैं।

1०:29 की आखिरी दस्तक के हर एपिसोड में दिखेगा मेरे किरदार का रहस्यमय अवतार : आयुषी भावे

अपकमिंग सुपरनैचुरल थ्रिलर 1०:29 की आखिरी दस्तक में बिंदू का किरदार निभाने वाली एक्ट्रेस आयुषी भावे ने बताया कि दर्शकों को हर एपिसोड के साथ उनके किरदार में नई परतें देखने को मिलेंगी।

किरदार के बारे में बोलते हुए आयुषी ने उत्साह व्यक्त किया और कहा, शो बहुत दिलचस्प है। मेरा किरदार मेरे पहले निभाए गए किरदारों से बेहद अलग है। बिंदू के रूप में मेरा किरदार काफी दिलचस्प है, वह जिंदादिल और दूसरों से हटकर है। दर्शकों को हर एपिसोड के साथ मेरे रहस्यमय किरदार की नई परतें देखने को मिलेंगी।

उन्होंने कहा, यह बहुत दिलचस्प होने वाला है, क्योंकि बिंदू का किरदार शो की कहानी का मुख्य केंद्र है, जो रहस्य और जटिलता से भरा हुआ है। यह शो रोंगटे खड़े कर देने वाला है। यह जल्द ही स्टार भारत पर प्रसारित होगा।

शास्त्रीय बौद्ध धर्म एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली

प्रो शांतिश्री धूलिपुड़ी पंडित

भारत की बौद्धिक एवं सभ्यतागत विरासत में बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत से इसका वैश्विक प्रसार हुआ। भारतीय ज्ञान परंपरा के निर्माण में शास्त्रीय भारतीय बौद्ध धर्म स्रोतों का मूल्यवान भंडार शामिल है। भारतीय आख्यान संरचना को इस दार्शनिक परंपरा को पुनर्भाषित और पुनर्संरचित कर पुन: अंगीकार करना चाहिए। नागार्जुन (150-250 ईस्वी) एक महान भारतीय दार्शनिक एवं भिक्षु थे, जिन्हें तिब्बती एवं पूर्वी एशियाई महायान परंपराओं में 'द्वितीय बुद्ध' भी कहा जाता है। वे वर्तमान आंध्र प्रदेश से थे और उन्होंने सभी धर्मों में शून्यता की केंद्रीय अवधारणा के इर्द-गिर्द महायान बौद्ध दर्शन को व्यवस्थित किया। उन्होंने मध्यमक या मध्य मार्गीय दर्शन प्रदान किया।

बौद्ध दर्शन की समावेशी एवं सार्वभौमिक प्रकृति भारतीय सभ्यता की विशिष्टताओं- विविधता, असम्मति एवं साहचर्य- को प्रतिबिंबित और रेखांकित करती है। अनेक धारणाओं के विपरीत, भारतीय ज्ञान प्रणाली में समावेशी भावना समाहित है, जो धार्मिक सीमाओं के परे जाकर प्रज्ञा के विविध स्रोतों को अंगीकार करती है। इस मूल्य के केंद्र में यह चेतना है कि ज्ञान सार्वभौमिक है और उसका विस्तार किसी भी धार्मिक परंपरा के दायरे से परे है। हालांकि हिंदू धर्म ने भारतीय ज्ञान प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें वेद एवं उपनिषद् जैसे मूलभूत पाठ भी शामिल हैं, पर भारतीय सभ्यता की बहुलवादी प्रकृति तथा विचारों के समन्वयक आदान-प्रदान को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, जिससे इसकी बौद्धिक धरोहर समृद्ध हुई है।

बौद्ध धर्म समावेशी मूल्य को अंगीकार करता है तथा वास्तविकता एवं मानव स्थिति पर विशिष्ट दृष्टि प्रदान करता है, जो हिंदू दर्शन तंत्र का विरोधाभासी नहीं, बल्कि पूरक है। महान दार्शनिक नागार्जुन ने अपनी रचना 'मूलमध्यमककारिका' के माध्यम से महायान बौद्ध दर्शन से मध्यमार्गी दर्शन में योगदान दिया। अपनी पुस्तक 'ताओ ऑफ फिजिक्स' में कापरा ने परमाणु एवं क्वांटम भौतिकी के क्षेत्र में शास्त्रीय भारतीय बौद्ध दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। यह आवश्यक है कि हम नागार्जुन के विचारों की पुनर्रचना करें।

उनकी रचना 'मूलमध्यमककारिका' के प्रारंभिक पद को देखें- 'स्वयं से नहीं, न ही अन्य से, दोनों से भी नहीं, बिना कारण किसी की उत्पत्ति नहीं होती।' यह कारण और प्रभाव के कर्म सिद्धांत को स्थापित करता है, जो किसी रचनाकार ईश्वर या परस्पर अंतर्निर्भरता के संजाल से परे स्थित किसी अन्य तत्व के प्रति समर्पण के बिना संचालित होता है। कारणों के संजाल के अंतर्गत हर उत्पत्ति होती है, इसलिए कोई पृथक स्वतंत्र अस्तित्व संभव नहीं है। अंतर्निर्भर वास्तविकता में सभी मानसिक प्रक्रियाएं भी समाहित हैं। बुद्ध कहते हैं कि परम वास्तविकता भी स्व-अस्तित्व के बिना है।

भारतीय ज्ञान तंत्र द्वारा प्रोन्नत बौद्ध धर्म की दार्शनिक अवधारणाओं में अन्य बातों के अलावा अनित्य और अनात्म भी शामिल हैं, जो सदियों से भारत में अध्ययन एवं शोध के विषय रहे हैं। बौद्ध परंपरा का अभिन्न तत्व ध्यान तनाव एवं अति-सक्रिय जीवनशैली जैसी आधुनिक चिंताओं के समाधान के लिए प्रभावी उपाय के रूप में सामने आया है। वैज्ञानिक शोधों से साबित हुआ है कि सचेतन जैसी ध्यान प्रक्रियाओं से मस्तिष्क में भावना, ध्यान और संवेदना से संबंधित सकारात्मक संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं।

किसी तरह के स्व-अस्तित्व नहीं होने की अवधारणा को 'शून्यता' कहते हैं। इसके दो कारण हैं- एक, हर चीज क्षण में प्रवाहित होती है और दो, ये क्षण निरंतर प्रवाह में एक-दूसरे का स्थान लेते रहते हैं। ये क्षणिक धारावाहिक अस्तित्व परस्पर कारणों से संबद्ध होते हैं, जिसे प्रतीत्य-समुत्पाद के नाम से जाना जाता है। सभी घटनाएं, क्षण या वस्तुएं परस्पर संबद्ध है और अंतर्निर्भर हैं। सभी मानसिक प्रक्रियाएं भी अंतर्निर्भर वास्तविकता में शामिल हैं। अध्ययन के एक विषय तथा एक धार्मिक व्यवहार के रूप में बौद्ध धर्म सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण हो जाता है, विशेषकर समुचित व्यवहार और सहिष्णुता को बढ़ावा देने वाले नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में।

भारतीय समाज के वैविध्य परिदृश्य में ये अवधारणाएं समावेश और साहचर्य के साथ रहने को रेखांकित करती हैं। करुणा और जुड़ाव जैसी बौद्ध धारणाओं से प्रभावित लोगों में असाधारण रूप से सहयोग व सहकार की प्रवृत्ति होती है। यह आर्थिक संदर्भों में भी देखने को मिलता है। आर्थिक नीतियों में बौद्ध सिद्धांतों को शामिल कर भरोसे और दीर्घकालिक लाभ पर आधारित एक ठोस आर्थिक व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। बौद्ध नैतिक मूल्यों को अपनाने और व्यक्तिगत कल्याण के बारे में हुए शोध रेखांकित करते हैं कि ऐसे लोग अधिक नैतिक, स्वस्थ, संतुष्ट एवं जुझारू होते हैं। ये शोध बौद्ध मूल्यों की निरंतर प्रासंगिकता को स्थापित करते हैं, जिनके आधार पर नैतिक जीवन और साहचर्यपूर्ण समाज स्थापित हो सकते हैं। भारतीय ज्ञान तंत्र में बौद्ध धर्म का अध्ययन एवं प्रसार अब केवल सांस्कृतिक प्रसार या सॉफ्ट पॉवर के औजार भर नहीं हैं। ऐसे प्रयासों के अपने लाभ हैं, पर बौद्ध परंपराओं को बढ़ावा देना अब स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने से जुड़ गया है। लगातार ऐसे शोध सामने आ रहे हैं, जो तनाव, अवसाद, दर्द आदि कम करने में ध्यान के महत्व को स्थापित कर रहे हैं।

ध्यान से लोगों की मानसिक और भावनात्मक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि को भी रेखांकित किया गया है। इस प्रकार, धार्मिक आयामों से इतर बौद्ध परंपरा का अध्ययन भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक और विशेषता को इंगित करता है।

यथार्थ की प्रकृति, सहने की अवधारणा और स्वतंत्र होने की राह जैसे बौद्ध धर्म के दार्शनिक तत्व आज की प्रमुख आवश्यकता हैं। नागार्जुन का मध्य मार्ग रेखांकित करता है कि शून्यता ही परिवर्तन और क्रिया को संभव बनाता है। वे इंगित करते हैं कि सारांश के माध्यम से अस्तित्व नहीं टिक सकता क्योंकि तब परिवर्तन असंभव हो जायेगा। तत्वों को अलग-अलग देखने से शुरू करने और फिर एकता की खोज करने वाली समझ पर यह नागार्जुन का प्रहार है।

वे अभिन्न एकता के प्रचारक हैं। अनिश्चितता और उथल-पुथल से जूझती दुनिया में बौद्ध धर्म की निरंतर धरोहर आशा और प्रबोधन के प्रज्वलित मशाल की तरह है। बौद्ध मध्यमार्गी तर्क उस संदर्भ पर बल देता है, जिससे सत्य को जाना जा सकता है। यह विशिष्टतावाद के पश्चिम के वर्चस्ववादी विमर्शों को खारिज करता है। यह धर्म के मेटाफिजिक्स तथा एक भारतीय आख्यान संरचना उपलब्ध कराता है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने वाले साझा सिद्धांत, प्रतीक एवं प्रक्रियाएं समाहित हैं।

(ये लेखिका के निजी विचार हैं।)

सू- दोकू क्र. 106

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.105 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

समानता व बंधुत्व आवश्यक

भारत के प्रधान न्यायाधीश डीवाइ चंद्रचूड़ ने आह्वान किया है कि हमें संविधान की भावना के अनुरूप एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने रेखांकित किया है कि हमारे संविधान निर्माताओं के मस्तिष्क में मानव सम्मान सर्वोच्च महत्व का विषय था। हमारा संविधान न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों के साथ-साथ बंधुत्व की भावना एवं व्यक्ति के सम्मान को भी प्रतिष्ठित करता है। यदि हम आपस में परस्पर सम्मान का आचरण नहीं करेंगे और हमारे व्यवहार में बंधुत्व नहीं होगा, तो स्वाभाविक रूप से समाज में तनाव एवं संघर्ष का वातावरण बनेगा। ऐसा वातावरण विकास, व्यवस्था एवं समृद्धि के प्रयासों के लिए बड़ा अवरोध होगा। यह अक्सर देखा जाता है कि विभिन्न श्रेणियों में बंटे हमारे समाज में लोग अपने पेशेवर या व्यक्तिगत जीवन में कनिष्ठों, सहायकों और कमजोरों के साथ उचित व्यवहार नहीं करते हैं। प्रधान न्यायाधीश ने वाहन चालकों, सफाई कर्मियों और चपरासियों के साथ होने वाले व्यवहार का उदाहरण भी दिया। आये दिन हम खबरों में देखते हैं कि आलीशान अपार्टमेंटों में रहने वाले लोग सोसाइटी के सुरक्षाकर्मियों या ठेले पर सामान बेचने वालों के साथ मारपीट या गाली-गलौज करते हैं। कार्यस्थल हो, आवास हो या बाजार, पीड़ित आम तौर पर इस तरह के अपमानजनक बर्ताव को बर्दाश्त कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वे कथित रूप से 'बड़े लोगों' का मुकाबला नहीं कर पायेंगे।

प्रधान न्यायाधीश ने उचित ही कहा है कि हमें अपने संवैधानिक अधिकारों का अहसास भी होना चाहिए तथा हमें अपने कर्तव्यों को भी समुचित ढंग से निभाना चाहिए। संविधान और उसके मूल्यों के बारे में व्यापक जागरूकता के प्रसार में शासन की भूमिका महत्वपूर्ण है। साथ ही, सरकार, प्रशासन और अदालतों को भी आम लोगों के अधिकारों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। कई बार तो उच्च शिक्षित और पेशेवर तौर पर सफल लोग अमानवीय और अन्यायपूर्ण बर्ताव करते देखे जाते हैं, जिनमें नेता, अफसर और जज भी शामिल हैं। ऐसे लोगों को अच्छा आचरण कर अपने पेशे और समाज में आदर्श बनना चाहिए। इसी प्रकार, घर-परिवार में बच्चे अपने माता-पिता और बड़ों के आचार-व्यवहार से सीखते हैं। प्रगति के लिए हमें प्रगतिशील मूल्यों को अपने आचरण का हिस्सा बनाना चाहिए। (आरएनएस)

15 से 20 प्रतिशत बच्चों एवं किशोरों में सामान्य से अधिक रक्तचाप की समस्या

हमारे देश में बच्चों और किशोरों में उच्च रक्तचाप की बढ़ती समस्या बेहद चिंताजनक है। एम्स के विशेषज्ञों का कहना है कि 10 से 19 साल की आयु के लगभग 15 से 20 प्रतिशत बच्चों एवं किशोरों में सामान्य से अधिक रक्तचाप की समस्या है। इससे मस्तिष्क आघात, दिल का दौरा, किडनी की बीमारियां और आंखों को नुकसान होने जैसी स्थितियां पैदा हो सकती हैं।

रक्तचाप की नियमित जांच और आवश्यक उपचार पर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। उल्लेखनीय है कि वयस्कों में भी यह समस्या गंभीर होती जा रही है। मुश्किल यह है कि अपने ब्लड प्रेशर को लेकर लोग अनजान बने रहते हैं। जिन्हें अधिक रक्तचाप का पता चल जाता है, उनमें से भी बहुत लोग उपचार नहीं कराते। ऐसे में उसका असर गहरा होता जाता है। बच्चों और किशोरों के मामले में अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। ध्यान रहे, उच्च रक्तचाप बीमारी नहीं है, वह अनेक बीमारियों का लक्षण है। बच्चे हों या बड़े, उच्च रक्तचाप होने के कारण समान हैं। एक तो यह अनुवांशिक हो सकता है।

बच्चों में मोटापा की समस्या भी बढ़ रही है। अधिक वजन से ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। कम आयु में तंबाकू या अन्य तरह के नशे की लत भी एक वजह हो सकती है। पढ़ाई का दबाव लगातार बढ़ता गया है। साथ ही, कंप्यूटर और मोबाइल का इस्तेमाल भी खूब होने लगा है। खेल-कूद के समय भी बच्चे-किशोर पढ़ाई में लगे होते हैं या फिर कंप्यूटर या मोबाइल पर मनोरंजन कर रहे होते हैं। शहरों में खेल के मैदान घटते जा रहे हैं। आवासीय इलाकों में इस पर कम ही ध्यान दिया जा रहा है। स्कूलों की दशा भी बेहतर नहीं है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा और मोबाइल की लत, ऑनलाइन गेम आदि से तनाव बढ़ता जा रहा है। बच्चों और किशोरों में, बड़ों में भी, उच्च रक्तचाप का यह बड़ा कारण है।

अभिभावकों की अपनी व्यस्तता और जीवनशैली भी बच्चों और किशोरों को प्रभावित करती है। इस समस्या और स्वास्थ्य से जुड़े अन्य मामलों के समाधान के लिए अभिभावकों और शिक्षकों को अग्रणी भूमिका निभानी होगी। तनाव न हो या उसका सामना कैसे किया जाए, इस बारे में स्कूलों में सिखाया जाना चाहिए। माता-पिता को अपनी संतानों के साथ अधिक समय बिताना चाहिए तथा यह जानने-समझने का प्रयास करना चाहिए कि उनके जीवन में क्या चल रहा है।

चिकित्सकीय या मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने में कोई हिचक या देरी समस्या को गंभीर बना सकती है। कुछ महानगरीय स्कूलों में बच्चों और अभिभावकों के साथ संवाद की समुचित व्यवस्था है। ऐसे इंतजाम सभी विद्यालयों में किये जाने चाहिए। यदि कम आयु में उच्च रक्तचाप के मसले को संभाल लिया जाए, तो आगे चलकर अनेक गंभीर और घातक स्वास्थ्य समस्याओं से बचा जा सकता है। (आरएनएस)

गुरु अर्जुन देव जी के 417वें शहादत दिवस पर लगाई मीठे जल की छबील

हमारे संवाददाता

देहरादून। सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव जी के 417वें शहादत दिवस पर राजपुर रोड ऑटो यूनियन द्वारा आज गांधी पार्क स्थित गर्मी में राहगीरों की प्यास बुझाने के लिए मीठे जल की छबील लगाई गई। सिखों के पांचवें गुरु एवं शहीदी के सरताज गुरु अर्जुन देव के शहीदी गुरु पर्व को राजपुर रोड ऑटो युनियन ने उल्लास एवं श्रद्धा से मनाया गया। शहर में सिख संगतों द्वारा मीठे शरबत की छबील लगाकर अपने गुरु की शहीदी के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई।

इस मौके पर महानगर कांग्रेस देहरादून के पूर्व महानगर अध्यक्ष लालचंद शर्मा ने बताया कि गुरु अर्जुन देव ने भाई गुरुदास की मदद से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल 5894 गुरु बाणी के शब्द हैं, जिनमें 2216 गुरु वाणी के शब्द गुरु अर्जुन देव के है जिनमें सुखमणि साहिब सबसे सरल एवं मन को शांति देने वाली वाणी है।

इस अवसर पर रांझा सिंह, मिन्टू सिंह, करन सिंह मक्खन सिंह, कश्मीर सिंह, मनी सिंह, पन्ना सिंह, हरमिन्दर सिंह, राजू सिंह, दीपक सिंह आदि उपस्थित रहे।

चिन्हीकरण सहित विभिन्न मांगों को लेकर परिषद ने सीएम को भेजा ज्ञापन

संवाददाता

देहरादून। चिन्हीकरण सहित विभिन्न मांगो को लेकर उत्तराखंड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद ने जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया। आज यहां उत्तराखंड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद के कार्यकर्ता जिला मुख्यालय पर एकत्रित हुए। जहाँ पर उन्होंने प्रर्दशन कर मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया। ज्ञापन में उन्होंने कहा कि आंदोलनकारियों की चिन्हीकरण की समस्या जस की तस है पांच मानक में आने के बावजूद उनका चिन्हीकरण नहीं हो पा रहा है। सरकार आंदोलनकारियों की मांग नहीं मान रही है। पेंशन भी समय-समय नहीं आ पा रही है जिससे आंदोलनकारियों में आक्रोश है।कुछ लोग पेंशन पर ही निर्भर है। ज्ञापन देने वालों में नवनीत गुसाईं, जगमोहन रावत, चिंतन सकलानी, सुरेश कुमार, प्रभात डंडरियाल, बालेश बवानिया, मुकेश मोगरा आदि शामिल रहे।

लोहे की जालियों से जकड़े कई पेड़ों को मुक्त कराया

देहरादून (कासं)। महाराणा प्रताप की जयंती के उपलक्ष में आज मोहित नगर के क्षेत्र में लोहे की जालियों से जकड़े कई पेड़ों को मुक्त कराया गया। श्री महाकाल सेवा समिति के अध्यक्ष रोशन राणा ने बताया की उनकी समिति कई सालों से पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी निशुल्क सेवाएं दे रहे हैं। इसी के तहत आज मोहित नगर में पांच पेड़ों को लोहे के ट्री गार्ड से मुक्त कराया गया और कई पेड़ों की जड़ों को सीमेंट से ढक दिया गया है जो कि अगर समय से पेड़ों से ट्री गार्ड और सीमेंट को नहीं हटाया जाता तो वह बड़े होने पर ट्री गार्ड में ही जकड़े जाते हैं और कुछ समय बाद सूखने लगते हैं, श्री महाकाल सेवा समिति की मुहिम कई कॉलोनियों में सक्सेस रही। जिन क्षेत्रों में भी ट्री गार्ड से पेड़ों को मुक्त कराया गया है उन सभी क्षेत्रवासियों ने बताया कि वह पेड़ अब पहले से अच्छे घने हो रहे हैं और देखने में भी सुंदर लग रहे हैं। इस मुहिम में समिति के बालकिशन शर्मा, संजीव गुप्ता, हेमराज अरोड़ा, डॉ नितिन अग्रवाल, गौरव जैन, आयुष जैन, राहुल माटा,अंकुर मल्होत्रा, कृतिका राणा, अनुष्का राणा और छेत्रवासी केशर सिंह रावत, दीपक कुमार निमरनिया, , राहुल कुमार, छोटेलाल मौर्य उमेश भट्ट, राजेश आनंद ने अपनी सेवाएं दी।

पीएम व क्षेत्र की जनता का आभार...

◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

मिलेगी इसे लेकर कई तरह की चर्चाएं आम थी। अजय भट्ट जो पूर्व सरकार में राज्य मंत्री थे, अनिल बलूनी जो पूर्व राष्ट्रीय प्रवक्ता थे व राजलक्ष्मी शाह जो तीसरी बार जीती हैं, के अलावा क्षेत्रीय संतुलन की बात सामने आ रही थी किंतु मोदी ने अजय टम्टा के नाम का फैसला करते हुए सभी कयासों को गलत साबित कर दिया है। अजय टम्टा के आवास पर पहुंचे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उन्हें पुष्प गुच्छ भेंट कर मंत्री बनाए जाने पर शुभकामनाएं व बधाई दी। इस अवसर पर टम्टा ने कहा कि उनके काम पर भरोसा जताने के लिए वह पीएम और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के आभारी हैं तथा पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ क्षेत्र तथा राज्य की जनता के लिए काम करेंगे। उन्होंने लोकसभा क्षेत्र जिसमें अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ व बागेश्वर आते हैं के सभी मतदाताओं का भी आभार जताया है। उन्होंने कहा कि मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूंगा।

बच्चों ने टाइम टेबल बनाया, फास्ट फूड से रख रहे हैं दूरी

संवाददाता

मुनस्यारी। प्राथमिक विद्यालय तिकसैन के छात्रों ने अपना टाइम टेबल बनाकर फास्ट फूड से दूरी बनाए रखी।

आज यहां जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया द्वारा चीन बॉर्डर से लगे क्षेत्र में शुरू की गई चॉकलेट मीटिंग की अनूठी पहल के अच्छे परिणाम सामने आने लगे है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय तिकसैन के शत-प्रतिशत छात्रों के पास पानी की गर्म बोतल है। बच्चे अब उबला हुआ पानी पीते है। बच्चों ने अपना टाइम टेबल बनाया है। फास्ट फूड से भी बच्चे दूरी बना रहे है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया द्वारा अपने जिला पंचायत वार्ड के विभिन्न विद्यालयों में एक वर्ष पूर्व से चॉकलेट बैठक आयोजित की जा रही है। चॉकलेट बैठक में शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक तथा पंचायत प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक की जाती है। विद्यार्थियों के साथ दोस्ती बढ़ाने के लिए गीत, कविता, नृत्य आदि गतिविधियां आयोजित की जाती है। दोस्ती के बाद गंभीर बहस तथा कार्य योजना भी बनाई जाती है।

चाकलेट मीटिंग में अभिभावकों को उनकी जिम्मेदारी की का एहसास कराया जाता है। एक वर्ष पूर्व हुए चॉकलेट मीटिंग में विद्यार्थियों के लिए तय किए गए मापन पर विद्यार्थी खरे उतरने लगे है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय तिकसैन की प्रधानाध्यापिका श्रीमती हेमलता पांगती ने बताया कि उनके विद्यालय के शत-प्रतिशत छात्रों के पास पानी की गर्म बोतल है। विद्यालय में भी भोजन माता विद्यार्थियों को बोयल पानी बनाकर उपलब्ध कराती है। वैसे घर से भी बच्चे बोयल पानी लेकर विद्यालय में आते है। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों ने अपने टाइम टेबल बनाए है। एक प्रति घर में चिपकाते है और दूसरा अपने कक्षा अध्यापक को देते है। छोटे बच्चों ने भी अपने जीवन के लक्ष्य तय कर लिए है। बच्चे मैगी के साथ रोटी अब नहीं खा रहे है। फास्ट फूड से भी दूरियां बना रहे है।

जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया का कहना है कि उनका एक ही उद्देश्य है कि बच्चों में परिवर्तन दिखे। इसके लिए अभिभावकों को भी तैयार किया जाता है। उन्होंने कहा कि चॉकलेट मीटिंग का कांसेप्ट है कि समाज जागरण। जो सीमांत क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग के जिला तथा खंड स्तर के अधिकारियों का उन्हें सहयोग प्राप्त होता है।

विद्यालय में शिक्षक भी इस अभियान में दिलचस्पी लेकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। उन्होंने कहा कि इस कॉन्सेप्ट पर आगे भी कार्यक्रम जारी रखे जाएंगे, जिसके लिए समुदाय की मदद ली जाएगी।

एसएफआई ने डीएवी महाविद्यालय पर जलाया एनटीए का पुतला

हमारे संवाददाता

देहरादून। अखिल भारतीय प्रदर्शन दिवस पर आज एसएफआई द्वारा एनटीए का पुतला डीएवी महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर फूंका गया।

पुतला दहन कार्यक्रम में राज्य सचिव हिमांशु चौहान ने बताया कि 4 जून को नीट परीक्षा परिणाम घोषित होने के बाद कई शिकायतें सामने आ रही हैं, जो नीट के परीक्षा संचालन की पारदर्शिता पर सवाल उठा रही हैं। यह एन.टी.ए. लाए जाने के बाद से महत्वपूर्ण परीक्षाओं में निरंतर हो रहे गंभीर भ्रष्टाचार एवं कुप्रबंधन की श्रृंखला की एक और कड़ी के रूप में हुआ है। परिणामस्वरूप, यह एक बार फिर साबित हो गया है कि एक केंद्रीकृत संस्था एनटीए नीट जैसी प्रवेश

परीक्षा आयोजित करवाने में अक्षम और अयोग्य है। हिमांशु चौहान ने कहा कि ऐसी शिकायतें भी मिली हैं कि एक ही केंद्र से एक ही क्रम में लगातार रोल नंबर वाले छात्रों को समान अंक मिले हैं, जो कि प्रसंगवश 720 में से 720 अंक हैं।

रैंक में इस गंभीर विवर्धन के कारण उम्मीदवारों को अब निजी कॉलेजों में प्रवेश लेने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, जो सीधे तौर पर एन.टी.ए. की नीतियाँ जैसे कि पाठ्यक्रम में उल्लेखनीय कमी के कारण है। मोदी सरकार में जिस तरह से एनएमसी और एन.टी.ए. मिलकर मेडिकल शिक्षा का निजीकरण कर रहे हैं, वह देश के भविष्य के लिए खतरनाक है। मेडिकल क्षेत्र में राज्य-आधारित संयुक्त प्रवेश परीक्षा प्रणाली को बदलने के लिए अंतहीन भ्रष्टाचार का तर्क था, अब यही अंतहीन भ्रष्टाचार का आरोप नीट परीक्षा को लेकर भी सामने आ रहा है।

उन्होने कहा कि स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया भ्रष्टाचार की इस घटना की तत्काल पारदर्शी और निष्पक्ष जांच की मांग करता है। इस अवसर पर शालिनी परमार, अंजली, पीयूष मुनियाल, प्राची कोठारी, कनिका, आयुष ध्यानी, प्रदीप, मुकुल आदि सम्मलित थे।

'समाजवादी पार्टी जिले में निकाय चुनाव मजबूती से लड़ेगी'

हमारे संवाददाता

देहरादून। समाजवादी पार्टी देहरादून की जिला कार्यकारिणी की बैठक समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय परेड ग्राउंड देहरादून मे सम्पन्न हुई। बैठक मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का आभार व धन्यवाद दिया और देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनने पर बधाई दी। बैठक में निर्णय लिया गया है कि समाजवादी पार्टी देहरादून जिले में निकाय चुनाव बडी मजबूती से लड़ेगी और पीडीए के फार्मूले पर उतराखण्ड में भी काम किया जायेगा अर्थात पिछडों, दलितों और अल्पसंख्यकों व अगडी जातियों को समाजवादी पार्टी से जोड़ने का काम किया जायेगा।

बैठक को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के राष्ट्रीय सचिव एव जिला प्रभारी

समाजवादी पार्टी देहरादून गुलफाम अली ने कहा कि देश की जनता ने मोदी सरकार के खिलाफ वोट देकर भाजपा की विभाजन कारी नीतियों को नकार दिया है मन्दिर-मस्जिद की भाजपा की नीतियों पर प्रहार किया है।

बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष सगीर मिर्जा ने की और बैठक का संचालन जिला प्रमुख महासचिव आरिफ वारसी ने किया। बैठक को संबोधित करने वालो मे मुख्य रुप से समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के राष्ट्रीय सचिव एव जिला प्रभारी समाजवादी पार्टी देहरादून गुलफाम अली, शिक्षक सभा के राष्ट्रीय सचिव डाक्टर राकेश पाठक, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती हेमा बोरा, लोहिया वाहनी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनुराग कुकरैती, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष रविन्द्र नेगी, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष लियाकत अब्बासी, जिला महासचिव सुशील गाँधी, महिला सभा की जिला अध्यक्ष श्रीमती तारा राजपूत, जिला कोषाध्यक्ष शशी कुमार सहित अन्य कई लोग शामिल रहे।

एक नजर

नदी में नहाते समय मां बेटे समेत 4 की मौत

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद में स्थित घाघरा नदी में स्नान करने गए एक ही परिवार के पांच सदस्य डूब गए। इस दौरान चार लोगों का शव बरामद किया गया है। जानकारी मिलने के बाद काफी संख्या में लोग वहां पहुंच गए परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। वहीं मौके पर पहुंची पुलिस डेड बॉडी को कब्जे में लेकर कार्रवाई में जुटी हुई है। बताया जा रहा है कि लखीमपुर खीरी और बहराइच सीमा से सटे तेलियर गांव में लखीमपुर शहर के ईदगाह मोहल्ले में रहने वाली 45 वर्ष की सुशीला श्रीवास्तव का मायका है। सुशीला अपने बच्चों के साथ मायके आई हुई थी। बताया जा रहा है कि सोमवार सुबह उसके बच्चे घाघरा नदी में स्नान करने के लिए कहने लगे जिस पर सुशीला 25 वर्षीय सत्यम 16 वर्षीय प्रिया 10 वर्षीय कान्हा और नैनी को लेकर घाघरा नदी में नहाने के लिए गई।

नहाते समय कान्हा अचानक गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। उसे डूबता देखकर अन्य बच्चे भी उसे बचाने गए और सभी डूबने लगे। उसके बाद सुशीला भी गई और वह भी गहरे पानी में डूबने लगी। नैनी उसे बचाने के लिए पहुंची तो वह भी डूबने लगी हालांकि नैनी ने शोर मचाई तो आसपास के लोगों की निगाह उसके ऊपर पड़ी। उसके बाद लोगों ने नैनी को बचा लिया जबकि सुशीला, कान्हा, सत्यम और प्रिया की डूबने से मौत हो गई।

रियासी आतंकी हमले पर भड़के डच नेता गीर्ट वाइल्डर्स !

नई दिल्ली। रियासी आतंकी हमले के खिलाफ भारत के लोगों में भारी गुस्सा है और डच नेता गीर्ट वाइल्डर्स ने एक ट्वीट कर भारत से अपने लोगों की रक्षा करने की अपील की है। गीर्ट वाइल्डर्स ने ट्वीट कर कहा है, कि कश्मीर घाटी में पाकिस्तानी आतंकवादियों को हिंदुओं की हत्या करने की इजाजत ना दें। अपने लोगों की रक्षा करें भारत!आपको बता दें, कि गीर्ट वाइल्डर्स वो डच नेता हैं,

जिन्होंने हमेशा से पाकिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ भारत का पक्ष लिया है और भारत के हिंदुओं के पक्ष में आवाज उठाई है। नुपूर शर्मा विवाद में उन्होंने खुलकर उनका साथ दिया था। गीर्ट विल्डर्स, जिन्होंने 2006 में नीदरलैंड्स में एंटी-इमिग्रेशन पार्टी फॉर फ्रीडम की स्थापना की, उन्होंने अन्य बातों के अलावा, हिजाब पहनने पर टैक्स लगाने (इसे उत्पीड़न का प्रतीक कहते हुए) और नीदरलैंड को यूरोपीय यूनियन से बाहर निकालने की मांग कर चुके हैं। उनके बयानों के चलते उन्हें नीदरलैंड का डोनाल्ड ट्रंप भी कहा जाता है और वो नीदरलैंड की आव्रजन नीतियों में बदलाव करने की मांग कर चुके हैं। अगस्त 2019 में, गीर्ट विल्डर्स भारत को पूर्ण लोकतंत्र और पाकिस्तान को 100 प्रतिशत आतंकवादी राज्य कहकर जम्मू और कश्मीर के विशेष दर्जे (अनुच्छेद 370) को रद्द करने के नरेंद्र मोदी सरकार के फैसले का जश्न मनाते हुए दिखाई दिए थे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां शुरू

देहरादून (सं)। 21जून को होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की दून योग पीठ में तैयारियां शुरू हो गई है। आज यहां दून योग पीठ देहरादून द्वारा अंतराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के लिए आयोजित विशेष योग शिविर दून योग पीठ हाथीबड़कला शाखा और गढ़ी कैंट शाखा दोनो जगह नियमित रूप से सुबह शाम चल रहा है, दून योग पीठ के संस्थापक योगाचार्य डा बिपिन जोशी जोशी ने बताया जन जन को योग से जोड़ने के लिए 15 जून से 21 जून तक विशेष योग सप्ताह मनाया जायेगा योग सप्ताह का शुभारम्भ शनिवार 15 जून प्रात: योग यात्रा से होगा, योग यात्रा प्रात: 6 बजे गांधी पार्क से चलकर घन्टाघर होते हुवे पुन: गांधी पार्क देहरादून पहुंचेगी, रविवार 16 जून को प्रात: दून योगपीठ की हाथीबड़कला शाखा में योग पर आधारित कार्यशाला का आयोजन होगा, 17 जून को टपकेश्वर महादेव में विशेष योग जनजागरण अभियान चलाया जाएगा 18 जून से 20 जून तक दून सहित पूरे राज्य मे विशेष योग जन जागरण अभियान चलेगा, अंतराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या में दून योग पीठ हाथीबड़कला शाखा में योग के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे योग शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा, 21जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भव्य तरीके से मनाया जाएगा 23 जून को योगाचार्य डा,बिपिन जोशी तृतीय वर्ल्ड पीस मिशन के लिए दुबई के लिए रवाना हो जाएंगे।

अधिकारी जीरो एक्सीडेंट राज्य के विजन के साथ कार्य करें: सीएस

संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूडी ने परिवहन विभाग के अधिकारियों को जीरो एक्सीडेंट राज्य के विजन के साथ कार्य करने की सख्त हिदायत दी।

आज यहां मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी ने परिवहन विभाग से राज्य में सड़क दुर्घटनाओं के बाद हुए डेथ ऑडिट के फलस्वरूप उठाए गए सुधारात्मक कदमों की जानकारी मांगी है। इसके साथ ही उन्होंने पूरी तरह से फेसलेस चालान सिस्टम को लागू करने के निर्देश दिए है। श्रीमती राधा रतूडी ने सम्पूर्ण राज्य सीमा एवं सभी मुख्य मार्गों पर एएनपीआर कैमरों के साथ ही शहरों में ड्रोन कैमरों से ट्रैफिक व्यवस्था की मॉनिटरिंग एवं चालान के निर्देश दिए हैं। सीएस ने शिक्षा विभाग को स्कूलों में सप्ताह में एक दिन बच्चों को सड़क सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूक करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने ट्रैफिक सिगनल को एएनपीआर तथा आरएलवीडी सिस्टम से अपग्रेड करने के निर्देश दिए हैं। सचिवालय में राज्य सड़क सुरक्षा कोष प्रबन्ध समिति की बैठक की अध्यक्षता के दौरान राज्य में सड़क दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने के दृष्टिगत मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी ने दोपहिया वाहनों पर पीछे बैठने वालों के लिए हेलमेट पहनने एव फॉर व्हीकल में सभी के लिए सीट बेल्ट के नियम को सख्ती से लागू करवाने के निर्देश दिए हैं। रोड सेफ्टी की महत्वपूर्ण बैठक में राज्य की ट्रैफिक व्यवस्था को हाईटेक एवं अपडेट करने के दृष्टिगत मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी ने सभी 13 जिलों में ड्रोन सेवाओं की व्यवस्था, ट्रैफिक सिगनल को एएनपीआर तथा आरएलवीडी सिस्टम से इंटिग्रेट व अपडेट करने, हाई टेक मोटर बाईक, कैमरों के साथ राडार स्पीड साइन बोर्ड, डिजिटल स्पीड साइन बोर्ड व वेरिएबल मेसेज डिस्पले बोर्ड लगाने, ट्रैफिक पुलिस कर्मियों हेतु बॉडी वॉर्न कैमरा, एल्कोमीटर / ब्रीथ एनालाइजर, पोर्टेबल साउण्ड सिस्टम जैसे आधुनिकतम टेक्नॉलाजी सिस्टम को लागू करने की वित्तीय एवं सैद्धान्तिक स्वीकृति दी है। सीएस श्रीमती राधा रतूड़ी ने परिवहन एवं पुलिस विभाग को सड़क सुरक्षा एवं यातायात जागरूकता हेतु अधिकाधिक सोशल मीडिया के माध्यम से जन जागरूकता को कार्य करने के निर्देश दिए है। जीरो एक्सीडेंट राज्य के विजन के साथ कार्य करने की सख्त हिदायत देते हुए मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूडी ने लोक निर्माण विभाग को वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु सुरक्षात्मक कार्यों के तहत क्रैश बैरियर लगाने, रोड डेलीनेटर व कैट आई, ब्लैक स्पॉट पर सुधारात्मक कार्य करने, पैरापिट एवं कॉशनरी साईन बोर्ड, रोड फर्नीचर रोड मार्किंग आदि कार्यों की वित्तीय एवं सैद्धान्तिक स्वीकृति दी। बैठक के दौरान मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी ने हिट एण्ड रन तथा गुड़ समेरिटन के व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए है। इसके साथ ही उन्होंने राज्य के मागों पर वैज्ञानिक तरीके से गति सीमा के निर्धारण की कार्ययोजना पर तत्परता से कार्य करने के निर्देश दिए हैं। बैठक में पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार, प्रमुख सचिव रमेश कुमार सुधांशु , सचिव अरविन्द सिंह हयाकी, वी षणमुगम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहे।

चोरी के 4 दुपहिया वाहनों के साथ एक गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने चोरी के चार दुपहिया वाहनों के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया गया जहाँ से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रेशम माजरी निवासी शिव सिंह पुत्र उदय सिंह द्वारा कोतवाली डोईवाला पर प्रार्थना पत्र दिया कि अज्ञात चोर द्वारा उसकी स्कूटी एक्टिवा फनवैली हाट बाजार के पास से चोरी कर कर ली गयी है। वहीं मिल रोड निवासी निखिल सिंघल पुत्र सतेन्द्र कुमार सिघल द्वारा कोतवाली डोईवाला पर प्रार्थना पत्र दिया कि उसकी स्कूटी को अज्ञात चोर द्वारा मिल रोड डोईवाला से चोरी कर लिया गया है। प्रार्थना पत्र के आधार पर थाना डोईवाला पर मुकदमा दर्ज किया गया। साथ ही दुर्गा चौंक निवासी अमित राणा द्वारा कोतवाली डोईवाला पर तहरीर देते हुए अपनी स्कूटी निवास स्थान से चोरी होने का मुकदमा दर्ज कराया । लगातार हुई वाहन चोरी की घटनाओं की गम्भीरता के दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मुकदमों का खुलासा करने व आरोपियों की गिरफ्तारी एवं माल बरामदगी हेतु तत्काल पुलिस टीमों का गठन कर आवश्यक निर्देश निर्गत किये गये। टीमों द्वारा घटना स्थल का निरीक्षण कर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेजों का अवलोकन करते हुए साथ ही मैनुअल पुलिसिंग के तहत सुरागरसी-पतारसी करते हुए आरोपियों के समबन्ध में जानकारी की गयी। पुलिस टीम द्वारा किये जा रहे लगातार प्रयासों के परिणाम स्वरूप जौलीग्रान्ट क्षेत्र में चैकिंग के दौरान पुलिस टीम द्वारा सूचना पर बीते रोज घटना को अंजाम देने वाले मनीष बुढाकोटी पुत्र गोपी बुढ़ाकोटी निवासी ग्राम करतियां पट्टी नोदनु थाना रिखणीखाल पौड़ी गढ़वाल को चोरी के वाहन के साथ गिरफ्तार किया गया। सख्ती से पूछताछ करने पर उसके द्वारा अन्य स्थानों से भी वाहन चोरी करना स्वीकार किया गया, उसकी निशानदेही पर पुलिस द्वारा जौलीग्रान्ट क्षेत्रान्तर्गत हरिद्वार रोड पर स्थित सतनाम ढाबा के पीछे के जगंलों से आरोपी द्वारा छिपाई गयी चोरी की 3 अन्य स्कूटिया बरामद की गई। आरोपी के आपराधिक इतिहास की जानकारी करने पर आरोपी के थाना कोटद्वार जनपद पौडी गढवाल से भी वाहन चोरी की घटना में जेल जाने की जानकारी मिली है। पूछताछ में आरोपी द्वारा बताया गया कि वह मूल रूप से जिला पौडी का निवासी है तथा वर्तमान मे खैरा ढाबा, रेशम माजरी लालतप्पड मे कार्य कर रहा था। आरोपी द्वारा डोईवाला क्षेत्र मे लगने वाले हाट बाजार के आस-पास रैकी कर वहाँ खडे ऐसे वाहनो को चिन्हित किया जाता था, जो भीड-भाड से अलग स्थानो पर खडे होते है तथा 2016 या उससे ऊपर के मॉडल के होते हैं। उक्त वाहनो को आरोपी द्वारा अपनी मास्टर-की से खोलकर चोरी कर वहां से ले जाकर जंगल में छिपा दिया जाता था, उक्त चोरी के वाहनों को बिजनोर/सहारनपुर तथा उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों में बेचने की फिराक था, किन्तु इससे पूर्व ही पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।